## अध्याय १२

# अद्वैत आचार्य तथा गदाधर पण्डित के विस्तार

भक्तिविनोद ठाकुर ने *अमृत-प्रवाह-भाष्य* में *आदिलीला* के बारहवें अध्याय का सार दिया है। इस अध्याय में अद्वैत आचार्य के अनुयायियों का वर्णन हुआ है, जिनमें से अद्वैत आचार्य के पुत्र अच्युतानन्द के अनुयायियों को शुद्ध अनुयायी माना जाता है, क्योंकि उन्हें अद्वैत आचार्य द्वारा दिये गये दर्शन का नवनीत प्राप्त हुआ था। अद्वैत आचार्य के अन्य तथाकथित वंशजों तथा अनुयायियों को मान्यता प्राप्त नहीं है। इस अध्याय में अद्वैत आचार्य के पुत्र गोपाल मिश्र तथा उनके सेवक कमलाकान्त विश्वास की भी कथा दी हुई है। गोपाल अपने बाल्यकाल में जगन्नाथ पुरी में गुण्डिचा मन्दिर बुहारते समय मूर्च्छित हो गया था और इस तरह उसे चैतन्य महाप्रभु की कृपा प्राप्त हुई थी। कमलाकान्त विश्वास की कथा इस रूप में आती है कि उसने प्रतापरुद्र महाराज से अद्वैत आचार्य का ऋण चुकाने के लिए तीन सौ रुपये उधार लिए थे और जब चैतन्य महाप्रभु को इसका पता चला, तो उन्होंने उसे खूब फटकारा। तब अद्वैत आचार्य के प्रार्थना करने पर कमलाकान्त विश्वास शुद्ध हुआ था। अद्वैत आचार्य के वंशजों का वर्णन करने के बाद इस अध्याय के अन्त में गदाधर पण्डित गोस्वामी के अनुयायियों का भी विवरण दिया गया है।

অদ্বৈতাঙ্ঘ্র্যব্জ-ভৃঙ্গাংস্তান্সারাসার-ভৃতোঽখিলান্ ।
হিত্বাসারান্সার-ভৃতো নৌমি চৈতন্য-জীবনান্ ॥ ১ ॥

**अद्वैताङ्घ्र्यब्ज-भृङ्गांस्तान्सारासार-भृतोऽखिलान् ।**
**हित्वासारान्सार-भृतो नौमि चैतन्य-जीवनान् ॥ १ ॥**

**अद्वैत-अङ्घ्रि**—अद्वैत आचार्य के चरणकमल; **अब्ज**—कमल पुष्प; **भृङ्गान्**—भ्रमर; **तान्**—वे सब; **सार-असार**—असली तथा बनावटी; **भृतः**—स्वीकार करके; **अखिलान्**—उन सबको; **हित्वा**—त्यागकर; **असारान्**—जो असली नहीं हैं; **सार-भृतः**—जो असली हैं; **नौमि**—मेरा नमस्कार हो; **चैतन्य-जीवनान्**—जिनके जीवन और प्राण भगवान् चैतन्य महाप्रभु हैं।

अनुवाद

**श्री अद्वैत प्रभु के अनुयायी दो प्रकार के थे। कुछ तो असली थे और कुछ नकली। मैं नकली अनुयायियों का बहिष्कार करते हुए श्री अद्वैत आचार्य के असली अनुयायियों को सादर नमस्कार करता हूँ, जिनके जीवन और प्राण श्री चैतन्य महाप्रभु थे।**

जय जय महाप्रभु श्री-कृष्ण-चैतन्य ।
जय जय नित्यानन्द जयाद्वैत धन्य ॥२॥

**जय जय महाप्रभु श्री-कृष्ण-चैतन्य ।**
**जय जय नित्यानन्द जयाद्वैत धन्य ॥ २ ॥**

**जय जय**—जय हो; **महाप्रभु**—महाप्रभु; **श्री-कृष्ण-चैतन्य**—श्रीकृष्ण चैतन्य; **जय जय**—जय हो; **नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु की; **जय अद्वैत**—अद्वैत प्रभु की जय हो; **धन्य**—जो अत्यन्त महिमा युक्त हैं।

अनुवाद

**श्री चैतन्य महाप्रभु की जय हो! नित्यानन्द प्रभु की जय हो और जय हो श्री अद्वैत प्रभु की! ये सभी धन्य हैं।**

श्री-चैतन्यामर-तरोर्द्वितीय-स्कन्ध-रूपिणः ।
श्रीमदद्वैत-चन्द्रस्य शाखा-रूपान्गणान्नुमः ॥३॥

**श्री-चैतन्यामर-तरोर्द्वितीय-स्कन्ध-रूपिणः ।**
**श्रीमदद्वैत-चन्द्रस्य शाखा-रूपानगणान्नुमः ॥ ३ ॥**

**श्री-चैतन्य**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **अमर**—अमर; **तरोः**—वृक्ष के; **द्वितीय**—दूसरी; **स्कन्ध**—बड़ी शाखा; **रूपिणः**—रूप में; **श्रीमत्**—पूर्णतः महिमान्वित; **अद्वैत-चन्द्रस्य**—भगवान् अद्वैतचन्द्र की; **शाखा-रूपान्**—शाखाओं के रूप में; **गणान्**—सभी अनुयायियों को; **नुमः**—मैं सादर नमस्कार करता हूँ।

अनुवाद

**मैं श्री चैतन्य रूपी नित्य वृक्ष की द्वितीय शाखा सर्वयशस्वी अद्वैत प्रभु को तथा उनकी उपशाखा रूपी उनके अनुयायियों को सादर नमस्कार करता हूँ।**

বৃক্ষের দ্বিতীয় স্কন্ধ—আচার্য-গোসাঞি ।
তাঁর যত শাখা হইল, তার লেখা নাঞি ॥৪॥

**বৃক্ষের দ্বিতীয় স্কন্ধ—আচার্য্য-গোসাঞি ।**
**তাঁর যত শাখা হইল, তার লেখা নাঞি ॥৪॥**

**वृक्षेर**—वृक्ष की; **द्वितीय स्कन्ध**—दूसरी बड़ी शाखा; **आचार्य्य-गोसाञि**—श्री अद्वैत आचार्य गोस्वामी; **ताँर**—उनकी; **यत**—सभी; **शाखा**—शाखाएँ; **हइल**—हो गईं; **तार**—उनका; **लेखा**—वर्णन; **नाञि**—नहीं है।

अनुवाद

**श्री अद्वैत प्रभु उस वृक्ष की द्वितीय बड़ी शाखा थे। उस वृक्ष की अनेक उपशाखाएँ हैं, किन्तु उन सभी का उल्लेख कर सकना असम्भव है।**

চৈতন্য-মালীর কৃপা-জলের সেচনে ।
সেই জলে পুষ্ট স্কন্ধ বাড়ে দিনে দিনে ॥৫॥

**চৈতন্য-মালীর কৃপা-জলের সেচনে ।**
**সেই জলে পুষ্ট স্কন্ধ বাড়ে দিনে দিনে ॥৫॥**

**चैतन्य-मालीर**—चैतन्य नामक माली का; **कृपा-जलेर**—उनकी दया रूपी जल से; **सेचने**—छिड़कने से; **सेइ जले**—उसी जल से; **पुष्ट**—पुष्ट हुईं (बढ़ीं); **स्कन्ध**—शाखाएँ; **बाड़े**—बढ़ गईं; **दिने दिने**—प्रतिदिन।

अनुवाद

**श्री चैतन्य महाप्रभु माली भी थे और ज्यों-ज्यों वे अपने कृपा-रूपी**

**जल से इस वृक्ष को सींचते, त्यों-त्यों नित्यप्रति उसकी सारी शाखाएँ तथा उपशाखाएँ बढ़ती जातीं।**

সেই স্কন্ধে যত প্রেম-ফল উপজিল ।
সেই কৃষ্ণ-প্রেম-ফলে জগৎ্ভরিল ॥৬॥

**सेइ स्कन्धे यत प्रेम-फल उपजिल ।**
**सेइ कृष्ण-प्रेम-फले जगत्भरिल ॥ ६ ॥**

**सेइ स्कन्धे**—उस शाखा पर; **यत**—सब; **प्रेम-फल**—भगवत्प्रेम के फल; **उपजिल**—उगे; **सेइ**—वे; **कृष्ण-प्रेम-फले**—कृष्ण-प्रेम के फल; **जगत्**—सारे जगत् में; **भरिल**—फैल गये।

अनुवाद

**इस चैतन्य-रूपी वृक्ष की शाखाओं में जो भगवत्प्रेम रूपी फल लगे, वे इतने अधिक थे कि सारा संसार ही कृष्ण-प्रेम से आप्लावित हो उठा।**

সেই জল স্কন্ধে করে শাখাতে সঞ্চার ।
ফলে-ফুলে বাড়ে,—শাখা হইল বিস্তার ॥৭॥

**सेइ जल स्कन्धे करे शाखाते सञ्चार ।**
**फले-फुले बाड़े,—शाखा हइल विस्तार ॥ ७ ॥**

**सेइ जल**—वह जल; **स्कन्धे**—शाखाओं पर; **करे**—करता है; **शाखाते**—उपशाखाओं पर; **सञ्चार**—संचार (उगना); **फले-फुले**—फलों तथा फूलों पर; **बाड़े**—बढ़ाता है; **शाखा**—शाखाओं को; **हइल**—हो गया; **विस्तार**—चारों ओर फैलाव।

अनुवाद

**ज्यों-ज्यों तना तथा शाखाएँ सींची गईं, त्यों-त्यों शाखाएँ तथा उपशाखाएँ बहुतायत से बढ़ती गईं और यह वृक्ष फलों तथा फूलों से लद गया।**

প্রথমে ত' এক-মত আচার্যের গণ ।
পাছে দুই-মত হৈল দৈবের কারণ ॥৮॥

**प्रथमे त' एक-मत आचार्य्येर गण ।**
**पाछे दुइ-मत हैल दैवेर कारण ॥ ८ ॥**

**प्रथमे**—प्रारम्भ में; **त'**—तो; **एक-मत**—एक मत; **आचार्य्येर**—अद्वैत आचार्य का; **गण**—अनुयायी; **पाछे**—बाद में; **दुइ-मत**—दो मत; **हैल**—हो गये; **दैवेर**—संयोग से; **कारण**—कारण।

### अनुवाद

**प्रारम्भ में अद्वैत आचार्य के सारे अनुयायी एक ही मत को मानते थे, किन्तु बाद में वे संयोग से दो भिन्न-भिन्न मतों का अनुसरण करने लगे।**

### तात्पर्य

*दैवेर कारण* शब्द इंगित करते हैं कि भाग्य से या ईश्वर की इच्छा से अद्वैत आचार्य के अनुयायी दो पक्षों में विभक्त हो गये। एक ही आचार्य के शिष्यों के बीच ऐसा विरोध गौड़ीय मठ के सदस्यों में भी पाया जाता है। प्रारम्भ में ॐ विष्णुपाद परमहंस परिव्राजकाचार्य अष्टोत्तरशत श्री श्रीमद् भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर प्रभुपाद की उपस्थिति में सारे शिष्यों में एकमत था, किन्तु उनके तिरोभाव के तुरन्त बाद उनमें मतभेद शुरू हो गया। एक पक्ष तो भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर के आदेशों का पूरा पालन करता रहा, किन्तु दूसरे पक्ष ने अपनी इच्छापूर्ति के लिए अपना निजी मत गढ़ लिया। भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर ने अपने प्रयाण के समय अपने सारे शिष्यों से एक परिचालक-समिति (गवर्निंग बॉडी) बनाकर मिलकर प्रचार-कार्य करने की अपील की थी। उन्होंने किसी एक विशेष व्यक्ति को अगला आचार्य बनने का आदेश नहीं दिया था। किन्तु उनके शरीर छोड़ते ही उनके प्रमुख सचिवों ने बिना अधिकार के आचार्य पद हथियाने की योजना बना डाली और इस बात को लेकर वे दो दलों में इस पर बँट गये कि अगला आचार्य कौन होगा। फलत: दोनों ही दल *असार* अर्थात् व्यर्थ थे, क्योंकि अपने गुरु के आदेश का उल्लंघन करने के कारण उनके पास कोई अधिकार नहीं था। यद्यपि गुरु का आदेश था कि परिचालक-समिति बनाई जाए और गौड़ीय मठ का प्रचार-कार्य सम्पन्न किया जाए, फिर भी दोनों अवैध पक्षों में मुकदमा चल पड़ा, जो ४० वर्षों बाद भी बिना किसी फैसले के चल रहा है।

इसीलिए हम किसी पक्ष से सम्बन्धित नहीं हैं। लेकिन चूँकि दोनों दलों ने गौड़ीय मठ संस्थान की भौतिक सम्पत्ति बाँटने में व्यस्त रहने के कारण प्रचार-कार्य बन्द कर दिया था, इसलिए हमने समस्त पूर्ववर्ती आचार्यों के संरक्षण में चैतन्य सम्प्रदाय का विश्वभर में प्रचार करने के भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर तथा भक्तिविनोद ठाकुर के व्रत को अपनाया और हम देख रहे हैं कि हमारा अकिंचन प्रयास सफल रहा है। हमने उन सिद्धान्तों का पालन किया है, जिन्हें श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर ने *भगवद्गीता* के श्लोक *व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन* की व्याख्या में दिया है। विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर के इस आदेश के अनुसार यह शिष्य का कर्तव्य है कि वह अपने गुरु के आदेशों का दृढ़ता से पालन करे। आध्यात्मिक जीवन में प्रगति की सफलता का रहस्य शिष्य द्वारा गुरु के आदेशों में दृढ़ विश्वास रखना है। वेदों द्वारा इसकी पुष्टि हुई है :

*यस्यदेवे पराभक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ।*
*तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः॥*

"जो व्यक्ति गुरु तथा पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के वचनों पर अटूट श्रद्धा रखता है, उसे वैदिक ज्ञान में सफलता का रहस्य प्राप्त होता है।" कृष्णभावनामृत आन्दोलन का प्रसार इसी सिद्धान्त के अनुसार किया जा रहा है। इसीलिए विरोधी असुरों के अनेक व्यवधानों के बावजूद हमारा प्रचार-कार्य सफलतापूर्वक चल रहा है, क्योंकि हमें अपने पूर्ववर्ती आचार्यों से सकारात्मक सहायता मिल रही है। हर काम का मूल्यांकन उसके फल से करना चाहिए। स्वघोषित आचार्य दल के सदस्य, जिन्होंने गौड़ीय मठ की सम्पत्ति हथियाई थी, सन्तुष्ट तो हैं, किन्तु वे प्रचार-कार्य में कोई प्रगति नहीं कर सके। अतएव उनके कार्यों के परिणाम के अनुसार उन्हें *असार* या व्यर्थ कहा जायेगा, जबकि अन्तर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ (इस्कॉन) की सफलता गुरु तथा गौरांग की अनुगामिनी होने से दिन-प्रतिदिन सारे संसार में बढ़ती जा रही है। श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर चाहते थे कि अधिक से अधिक पुस्तकें छापी जाएँ और विश्वभर में वितरित की जाएँ। हमने इस कार्य को करने का यथाशक्ति प्रयास किया है और हमें आशातीत सफलता प्राप्त हो रही है।

केह त' आचार्य आज्ञाय, केह त' स्वतन्त्र ।
स्व-मत कल्पना करे दैव-परतन्त्र ॥९॥

केह त' आचार्य्य आज्ञाय, केह त' स्वतन्त्र ।
स्व-मत कल्पना करे दैव-परतन्त्र ॥ ९ ॥

**केह त'**—कुछ; **आचार्य्य**—गुरु; **आज्ञाय**—उनकी आज्ञा से; **केह त'**—कुछ; **स्वतन्त्र**—स्वतंत्र रूप से; **स्व-मत**—अपने मत की; **कल्पना करे**—कल्पना करते हैं; **दैव-परतन्त्र**—माया के प्रभाव में।

अनुवाद

**कुछ शिष्यों ने आचार्य के आदेशों का दृढ़तापूर्वक पालन किया और कुछ अन्य दैवीमाया के वशीभूत होकर अपना स्वतंत्र मत गढ़ने के कारण भटक गये।**

तात्पर्य

यह श्लोक भटकाव की शुरुआत का वर्णन करता है। जब शिष्यगण गुरु के आदेशों का दृढ़तापूर्वक पालन नहीं करते, तो तुरन्त दो मत हो जाते हैं। किन्तु गुरु के मत से भिन्न कोई भी मत व्यर्थ (असार) होता है। आध्यात्मिक उन्नति में भौतिकतावादी आधार पर गढ़े गये विचारों को प्रविष्ट नहीं करने दिया जा सकता। यही भटकाव है। भौतिक विचारों में आध्यात्मिक उन्नति समंजित करने के लिए कोई स्थान नहीं है।

आचार्येर मत येई, सेई मत सार ।
ताँर आज्ञा लङ्घि' चले, सेई त' असार ॥१०॥

आचार्य्येर मत य्येइ, सेइ मत सार ।
ताँर आज्ञा लङ्घि' चले, सेइ त' असार ॥ १० ॥

**आचार्य्येर**—गुरु (अद्वैत प्रभु) के; **मत**—मत; **य्येइ**—जो है; **सेइ**—वह; **मत**—मत; **सार**—असली सिद्धान्त; **ताँर**—उनकी; **आज्ञा**—आज्ञा; **लङ्घि'**—लांघकर; **चले**—चलता है; **सेइ**—वह; **त'**—तो; **असार**—व्यर्थ।

अनुवाद

**आध्यात्मिक जीवन में गुरु का आदेश ही जीवन्त सिद्धान्त है। जो**

**कोई गुरु की आज्ञा का उल्लंघन करता है, वह तुरन्त व्यर्थ ( असार ) हो जाता है।**

तात्पर्य

यह श्री कृष्णदास कविराज गोस्वामी का मत है। जो व्यक्ति गुरु के आदेशों का कठोरता से पालन करते हैं, वे भगवान् की इच्छा को पूरा करने में उपयोगी होते हैं, किन्तु जो गुरु के आदेशों से भटक जाते हैं, वे असार हैं।

असारेर नामे इहाँ नाहि प्रयोजन ।
भेद जानिबारे करि एकत्र गणन ॥ ११ ॥

**असारेर नामे इहाँ नाहि प्रयोजन ।**
**भेद जानिबारे करि एकत्र गणन ॥ ११ ॥**

**असारेर**—व्यर्थ लोगों का; **नामे**—उनके नाम; **इहाँ**—इस सम्बन्ध में; **नाहि**—नहीं; **प्रयोजन**—उपयोग; **भेद**—भेद; **जानिबारे**—जानने के लिए; **करि**—मैं करता हूँ; **एकत्र**—एक सूची में; **गणन**—गणना।

अनुवाद

**जो असार हैं, उनका नाम लेना व्यर्थ है। मैंने उनका उल्लेख केवल उपयोगी भक्तों से अन्तर दिखलाने के लिए किया है।**

धान्य-राशि मापे यैछे पात्ला सहिते ।
पश्चाते पात्ला उड़ाञा संस्कार करिते ॥ १२ ॥

**धान्य-राशि मापे ग्रैछे पात्ला सहिते ।**
**पश्चाते पात्ला उड़ाञा संस्कार करिते ॥ १२ ॥**

**धान्य-राशि**—धान के ढेर; **मापे**—मापता है; **ग्रैछे**—जैसे; **पात्ला**—व्यर्थ भूसा; **सहिते**—सहित; **पश्चाते**—बाद में; **पात्ला**—व्यर्थ भूसा; **उड़ाञा**—पंखा करना; **संस्कार**—शुद्धि; **करिते**—करना।

अनुवाद

**पहले धान पुआल के साथ मिला रहता है और धान को पुआल से अलग करने के लिए उसे हवा देनी पड़ती है।**

### तात्पर्य

कृष्णदास कविराज गोस्वामी द्वारा दिया गया यह उदाहरण अत्यन्त सटीक है। गौड़ीय मठ के सदस्यों पर ऐसी ही विधि लागू होती है। भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर के शिष्य तो अनेक हैं, किन्तु यह निर्णय करने के लिए कि वास्तव में कौन उनका शिष्य है और उन्हें उपयोगी तथा असार में विभाजित करने के लिए, ऐसे शिष्यों द्वारा गुरु की इच्छा पूरी करने वाले कार्यकलापों को जानना होगा। भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर ने भारत के बाहर श्री चैतन्य महाप्रभु के सम्प्रदाय को फैलाने का भरसक प्रयत्न किया। जब वे जीवित थे, तब वे श्री चैतन्य महाप्रभु के सम्प्रदाय का प्रचार करने के लिए शिष्यों को भारत से बाहर के देशों में भेजने के लिए प्रोत्साहन देते थे। किन्तु इन शिष्यों को सफलता नहीं मिली, क्योंकि वे लोग विदेशों में अपने सम्प्रदाय का प्रचार करने के प्रति वास्तव में गम्भीर नहीं थे। वे तो विदेशों में जाने का श्रेय मात्र लूटना चाहते थे और भारत में उसी बल पर अपने आपको विदेश से लौटे प्रचारकों के रूप में विज्ञापित करना चाहते थे। अनेक संन्यासियों ने प्रचार की इस दिखावटी विधि विगत ८० वर्षों से भी अधिक समय से अपना रखी है। किन्तु इनमें से कोई भी कृष्णभावनामृत के असली सम्प्रदाय का प्रचार सारे विश्व में नहीं कर पाया। वे भारत लौटकर यह झूठा विज्ञापन करते रहे कि उन्होंने सारे विदेशियों को वेदान्त या कृष्णभावनामृत के विचारों वाला बना दिया है। इसके बाद वे भारत में चन्दा एकत्र करके विलासी जीवन बिताने में मग्न हो गये। जिस प्रकार व्यर्थ पुआल से धान अलग करने के लिए हवा देनी पड़ती है, उसी तरह कृष्णदास कविराज गोस्वामी द्वारा संस्तुत विधि स्वीकार करके यह बड़ी आसानी से जाना जा सकता है कि कौन असली विश्व-प्रचारक है और कौन व्यर्थ है।

अच्युतानन्द—बड़ शाखा, आचार्य-नन्दन ।
आजन्म सेविला तेँहो चैतन्य-चरण ॥ १३॥

**अच्युतानन्द—बड़ शाखा, आचार्य-नन्दन ।**
**आजन्म सेविला तेंहो चैतन्य-चरण ॥ १३॥**

**अच्युतानन्द**—अच्युतानन्द; **बड़ शाखा**—एक बड़ी शाखा; **आचार्य्य-नन्दन**—अद्वैत आचार्य के पुत्र; **आजन्म**—जीवन के आरम्भ से ही; **सेविला**—सेवा की; **तेंहो**—उन्होंने; **चैतन्य-चरण**—चैतन्य महाप्रभु के चरणकमल।

अनुवाद

**अद्वैत आचार्य की एक विशाल शाखा थे उनके पुत्र अच्युतानन्द। वे अपने जीवन के प्रारम्भ से ही चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों की सेवा में संलग्न रहे।**

চৈতন্য-গোসাঞির গুরু—কেশব ভারতী ।
এই পিতার বাক্য শুনি' দুঃখ পাইল অতি ॥ ১৪ ॥

**चैतन्य-गोसाञिर गुरु—केशव भारती ।**
**एइ पितार वाक्य शुनि' दुःख पाइल अति ॥ १४ ॥**

**चैतन्य**—चैतन्य महाप्रभु; **गोसाञिर**—गुरु; **गुरु**—उनके गुरु; **केशव भारती**—केशव भारती; **एइ**—ये; **पितार**—अपने पिता के; **वाक्य**—शब्द; **शुनि'**—सुनकर; **दुःख**—दुःख; **पाइल**—पाया; **अति**—अत्यन्त।

अनुवाद

**जब अच्युतानन्द ने अपने पिता से यह सुना कि केशव भारती चैतन्य महाप्रभु के गुरु थे, तो वे अत्यधिक अप्रसन्न हुए।**

জগদ্গুরুতে তুমি কর ঐছে উপদেশ ।
তোমার এই উপদেশে নষ্ট হইল দেশ ॥ ১৫ ॥

**जगद्गुरुते तुमि कर ऐछे उपदेश ।**
**तोमार एइ उपदेशे नष्ट हइल देश ॥ १५ ॥**

**जगत्-गुरुते**—जगद् गुरु पर; **तुमि**—आप; **कर**—करते हैं; **ऐछे**—ऐसा; **उपदेश**—उपदेश; **तोमार**—आपके; **एइ उपदेशे**—इस उपदेश से; **नष्ट**—नष्ट; **हइल**—हो जायेगा; **देश**—देश।

अनुवाद

**उन्होंने अपने पिता से कहा, "आपका यह उपदेश कि केशव भारती श्री चैतन्य महाप्रभु के गुरु हैं, सारे देश को बर्बाद कर देगा।**

চৌদ্দ ভুবনের গুরু—চৈতন্য-গোসাঞি ।
তাঁর গুরু—অন্য, এই কোন শাস্ত্রে নাই ॥১৬॥

**चौद्द भुवनेर गुरु—चैतन्य-गोसाञि ।**
**ताँर गुरु—अन्य, एइ कोन शास्त्रे नाइ ॥ १६ ॥**

**चौद्द**—चौदह; **भुवनेर**—भुवनों के; **गुरु**—गुरु; **चैतन्य-गोसाञि**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताँर गुरु**—उनके आध्यात्मिक गुरु; **अन्य**—कोई दूसरा; **एइ**—यह; **कोन**—कोई; **शास्त्रे**—शास्त्रों में; **नाइ**—कोई उल्लेख नहीं है।

अनुवाद

**"श्री चैतन्य महाप्रभु तो चौदहों लोकों के गुरु हैं, किन्तु आप बतलाते हैं कि उनका गुरु कोई अन्य है। इसकी पुष्टि किसी मान्य शास्त्र द्वारा नहीं होती।"**

পঞ্চম বর্ষের বালক কহে সিদ্ধান্তের সার ।
শুনিয়া পাইলা আচার্য সন্তোষ অপার ॥১৭॥

**पञ्चम वर्षेर बालक कहे सिद्धान्तेर सार ।**
**शुनिया पाइला आचार्य्य सन्तोष अपार ॥ १७ ॥**

**पञ्चम**—पाँच; **वर्षेर**—वर्ष; **बालक**—बालक; **कहे**—कहता है; **सिद्धान्तेर**—सिद्धान्त रूप में; **सार**—सार; **शुनिया**—सुनकर; **पाइला**—पाया; **आचार्य्य**—अद्वैत आचार्य; **सन्तोष**—सन्तोष; **अपार**—बहुत।

अनुवाद

**जब अद्वैत आचार्य ने अपने पाँच वर्ष के पुत्र अच्युतानन्द से यह वाक्य सुना, तो उन्हें परम सन्तोष हुआ, क्योंकि यह सिद्धान्त का सार था।**

तात्पर्य

भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर ने तेरहवें से सत्रहवें श्लोक की टीका करते हुए अद्वैत आचार्य की वंशावली का विस्तृत वर्णन किया है। *चैतन्य-भागवत* के अन्त्य खण्ड के पहले अध्याय में बतलाया गया है कि अच्युतानन्द अद्वैत आचार्य प्रभु के ज्येष्ठ पुत्र थे। *अद्वैत-चरित* नामक एक संस्कृत ग्रंथ में कहा गया है, "अद्वैत आचार्य प्रभु के तीन पुत्र हुए और वे भगवान् चैतन्य के भक्त

थे। इनके नाम थे अच्युत, कृष्ण मिश्र तथा गोपाल दास। ये तीनों उनकी पत्नी सीतादेवी की कोख से जन्मे थे। अद्वैत आचार्य के तीन पुत्र और थे, जिनके नाम थे बलराम, स्वरूप तथा जगदीश। इस तरह उनके कुल छः पुत्र थे।" इन छहों में से तीन चैतन्य महाप्रभु के कट्टर अनुयायी थे और इनमें से अच्युतानन्द ज्येष्ठ थे।

अद्वैत प्रभु का विवाह १५ वीं शकाब्द के प्रारम्भ (१५ वीं शताब्दी ई. के अन्तिम भाग में) में हुआ था। जब चैतन्य महाप्रभु १४३३-१४३४ शकाब्द (१५११-१२ ई.) में जगन्नाथ पुरी से वृन्दावन जा रहे थे, तो वे रामकेलि गाँव जाना चाहते थे। तब अच्युतानन्द केवल पाँच वर्ष के थे। *चैतन्य भागवत* (अन्त्य खण्ड, चतुर्थ अध्याय) के अनुसार अच्युतानन्द उस समय केवल पाँच वर्ष के थे और नग्न खड़े थे (*पञ्चवर्ष वयस मधुर दिगम्बर*)। इसलिए यह निष्कर्ष निकलता है कि अच्युतानन्द का जन्म १४२८ शकाब्द (१५०६ ई.) में हुआ होगा। अच्युतानन्द के जन्म के पूर्व अद्वैत प्रभु की पत्नी सीतादेवी चैतन्य महाप्रभु को उनके जन्म के समय देखने गई थीं। अतएव असम्भव नहीं है कि १४०७ से १४२८ शकाब्द (१४८६-१५०७ ई.) के बीच के २१ वर्षों में अद्वैत प्रभु से उन्हें तीन पुत्रों की प्राप्ति हुई हो। *सीताद्वैत चरित* नामक एक अप्रामाणिक बाँग्ला पुस्तक में, जो १७९२ शकाब्द (१८७० ई.) में *नित्यानन्ददायिनी* नामक अप्रामाणिक अखबार में छपी थी, यह बतलाया गया है कि अच्युतानन्द श्री चैतन्य महाप्रभु के सहपाठी थे। *चैतन्य-भागवत* के अनुसार यह कथन तनिक भी विश्वसनीय नहीं है। संन्यास ग्रहण करने के बाद चैतन्य महाप्रभु १४३१ शकाब्द (१५०९ ई.) में शान्तिपुर स्थित अद्वैत प्रभु के घर पधारे थे। उस समय अच्युतानन्द की आयु केवल तीन वर्ष की थी, ऐसा कथन *चैतन्य-भागवत* के अन्त्य खण्ड के प्रथम अध्याय में मिलता है। चैतन्य भागवत में यह भी कहा गया है कि अद्वैत प्रभु का नग्न बालक तुरन्त आकर चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों पर गिर पड़ा। महाप्रभु ने तुरन्त ही उसे गोद में उठा लिया, यद्यपि वह बालक उतना साफ सुथरा नहीं था और उसके पूरे शरीर में धूल लगी थी। चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "प्रिय अच्युत, अद्वैत आचार्य मेरे पिता हैं, अतएव हम दोनों भाई हुए।"

नवद्वीप में अपने निवास-स्थान पर अपना आध्यात्मिक स्वरूप प्रकट करने के पूर्व श्री चैतन्य महाप्रभु ने श्रीवास ठाकुर के भाई श्री राम पण्डित से कहा था कि वे शान्तिपुर जाकर अद्वैत आचार्य को ले आये। उस समय अच्युतानन्द अपने पिता के साथ आये। कहा जाता है—*अद्वैतेर तनय 'अच्युतानन्द' नाम / परम बालक, सेहो कान्दे अविराम।* अच्युतानन्द भी दिव्य आनन्द में क्रन्दन करने में सम्मिलित हुए। यही नहीं, जब चैतन्य महाप्रभु ने अद्वैत आचार्य को *भक्तियोग* के विरोधी निर्विशेष दृष्टिकोण से *श्रीमद्भागवत* की व्याख्या करने के लिए फटकारा था, तब अच्युतानन्द भी उपस्थित थे। अतएव ये सारी घटनाएँ श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा संन्यास-ग्रहण करने के दो-तीन वर्ष पूर्व घटी होंगी। *चैतन्य-भागवत* के अन्त्य खण्ड के पहले अध्याय में कहा गया है कि अद्वैत आचार्य के पुत्र अच्युतानन्द ने महाप्रभु को नमस्कार किया। अतएव यह निष्कर्ष निकलता है कि अच्युतानन्द अपने जीवन के प्रारम्भ से ही चैतन्य महाप्रभु के महान् भक्त थे।

इसकी कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है कि अच्युतानन्द का कभी विवाह हुआ, किन्तु उन्हें अद्वैत आचार्य वंश की सबसे बड़ी शाखा कहा गया है। *शाखानिर्णयामृत* नामक पुस्तक से ज्ञात होता है कि अच्युतानन्द गदाधर पण्डित के शिष्य थे और उन्होंने जगन्नाथ पुरी में चैतन्य महाप्रभु की शरण ग्रहण की तथा वे भक्ति में लग गये। *चैतन्य-चरितामृत* (*आदिलीला,* अध्याय दस) में बतलाया गया है कि अद्वैत आचार्य के पुत्र अच्युतानन्द चैतन्य महाप्रभु की शरण में जगन्नाथ पुरी में रहते थे। गदाधर पण्डित भी अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में चैतन्य महाप्रभु के साथ रहते थे। इसलिए इसमें कोई सन्देह नहीं रह जाता कि अच्युतानन्द पण्डित गदाधर के शिष्य थे। रथयात्रा के समय रथ के समक्ष श्री चैतन्य महाप्रभु के नृत्य का जो विवरण मिलता है, उसमें अच्युतानन्द के नाम का भी कई बार उल्लेख हुआ है। ऐसा कहा जाता है कि शान्तिपुर से आई अद्वैत आचार्य की मंडली में अच्युतानन्द नाच रहे थे और बाकी लोग गा रहे थे। उस समय वे केवल छः वर्ष के बालक थे। श्री कविकर्णपूर द्वारा रचित *गौरगणोद्देश-दीपिका* (श्लोक ८७) में बतलाया गया है कि अच्युतानन्द गदाधर पण्डित के शिष्य थे और चैतन्य महाप्रभु के प्रिय एवं महान् भक्त थे। कुछेक

के मतानुसार वे शिवजी के पुत्र कार्तिकेय के अवतार थे। अन्य लोगों के मतानुसार वे पूर्वजन्म में अच्युता नामक गोपी थे। *गौरगणोद्देश-दीपिका* (८८) में इन दोनों मतों का समर्थन हुआ है। एक अन्य पुस्तक *नरोत्तम-विलास* में, जिसे श्री नरहरि दास ने संकलित किया है, खेतरि-उत्सव के समय अच्युतानन्द की उपस्थिति का उल्लेख मिलता है। श्री नरहरि दास के अनुसार अच्युतानन्द अपने जीवन के अन्तिम समय अपने शान्तिपुर वाले घर में रहते थे, किन्तु चैतन्य महाप्रभु की उपस्थिति में वे गदाधर पण्डित के साथ जगन्नाथ पुरी में रहते थे।

अद्वैत आचार्य के छः पुत्रों में से तीन—अच्युतानन्द, कृष्ण मिश्र तथा गोपाल दास आज्ञापूर्वक चैतन्य महाप्रभु की सेवा करते रहे। चूँकि अच्युतानन्द ने विवाह नहीं किया, इसलिए उनकी कोई सन्तान नहीं थी। अद्वैत आचार्य के द्वितीय पुत्र कृष्ण मिश्र के दो पुत्र थे—रघुनाथ चक्रवर्ती तथा दोलगोविन्द। रघुनाथ के वंशज आज भी शान्तिपुर के पड़ोस में मदनगोपाल पाड़, गणकर, मृजापुर तथा कुमारखालि में रहते हैं। दोलगोविन्द के तीन पुत्र हुए—चाँद, कन्दर्प तथा गोपीनाथ। कन्दर्प के वंशज मल्दाह में जिकाबाड़ी गाँव में रहते हैं। गोपीनाथ के भी तीन पुत्र हुए—श्रीवल्लभ, प्राणवल्लभ तथा केशव। श्रीवल्लभ के वंशज मशियाडारा (महिषडेरा), दामुकदिया तथा चण्डीपुर नामक गाँवों में रहते हैं। श्रीवल्लभ के वंश का वंश-वृक्ष प्राप्त है, जो उनके ज्येष्ठ पुत्र गंगानारायण से शुरू होता है। श्रीवल्लभ के सबसे छोटे पुत्र रामगोपाल के वंशज अभी भी दामुकदिया, चण्डीपुर, शोलमारी आदि गाँवों में रह रहे हैं। प्राणवल्लभ तथा केशव के वंशज उथली में रहते हैं। प्राणवल्लभ का पुत्र रत्नेश्वर था, जिसका पुत्र कृष्णराम हुआ और इसके सबसे छोटे पुत्र का नाम लक्ष्मीनारायण था। इसका पुत्र नवकिशोर हुआ और नवकिशोर का दूसरा पुत्र राममोहन हुआ, जिसका ज्येष्ठ पुत्र जगबन्धु था, जिसके तीसरे पुत्र वीरचन्द्र ने संन्यास ग्रहण करके कटवा में चैतन्य महाप्रभु का विग्रह स्थापित किया। राममोहन के ये दो पुत्र बड़ प्रभु तथा छोट प्रभु कहलाते थे। इन्होंने नवद्वीप धाम की परिक्रमा का उद्घाटन किया। कृष्ण मिश्र की परम्परा में अद्वैत प्रभु के पूरे वंश-वृक्ष के लिए *वैष्णव-मञ्जूषा* नामक ग्रंथ देखना चाहिए।

কৃষ্ণ-মিশ্র-নাম আর আচার্য-তনয় ।
চৈতন্য-গোসাঞি বৈসে যাঁহার হৃদয় ॥১৮॥

**কৃষ্ণ-মিশ্র-নাম আর আচার্য্য-তনয় ।**
**চৈতন্য-গোসাঞি বৈসে যাঁহার হৃদয় ॥১৮॥**

**कृष्ण-मिश्र**—कृष्ण मिश्र; **नाम**—नाम का; **आर**—और; **आचार्य्य-तनय**—अद्वैत आचार्य के पुत्र; **चैतन्य-गोसाञि**—चैतन्य महाप्रभु; **बैसे**—बैठते हैं; **याँहार**—जिनके; **हृदय**—हृदय में।

अनुवाद

**कृष्ण मिश्र अद्वैत आचार्य के पुत्र थे। उनके हृदय में श्री चैतन्य महाप्रभु सदैव विराजमान रहते थे।**

শ্রী-গোপাল-নামে আর আচার্যের সুত ।
তাঁহার চরিত্র, শুন, অত্যন্ত অদ্ভুত ॥১৯॥

**শ্রী-গোপাল-নামে আর আচার্য্যের সুত ।**
**তাঁহার চরিত্র, শুন, অত্যন্ত অদ্ভুত ॥১৯॥**

**श्री-गोपाल**—श्री गोपाल; **नामे**—नाम से; **आर**—अन्य; **आचार्य्येर**—अद्वैत आचार्य का; **सुत**—पुत्र; **ताँहार**—उनका; **चरित्र**—चरित्र; **शुन**—सुनो; **अत्यन्त**—अत्यन्त; **अद्भुत**—अद्‌भुत।

अनुवाद

**श्री अद्वैत आचार्य प्रभु के अन्य पुत्र थे श्री गोपाल। अब उनकी विशेषताओं के बारे में सुनिये, क्योंकि वे सभी अत्यन्त अद्‌भुत हैं।**

तात्पर्य

जैसा ऊपर बताया गया है, श्री गोपाल अद्वैत आचार्य के तीन भक्त पुत्रों में से एक थे। *चैतन्य-चरितामृत* (मध्यलीला, अध्याय १२, श्लोक १४३-१४९) में उनके जीवन तथा चरित्र का और वर्णन हुआ है।

গুণ্ডিচা-মন্দিরে মহাপ্রভুর সম্মুখে ।
কীর্তনে নর্তন করে বড় প্রেম-সুখে ॥২০॥

**गुण्डिचा-मन्दिरे महाप्रभुर सम्मुखे ।**
**कीर्तने नर्तन करे बड़ प्रेम-सुखे ॥ २० ॥**

**गुण्डिचा-मन्दिरे**—जगन्नाथ पुरी में गुन्डिचा मन्दिर में; **महाप्रभुर**—चैतन्य महाप्रभु के; **सम्मुखे**—सामने; **कीर्तने**—संकीर्तन में; **नर्तन**—नृत्य; **करे**—करते; **बड़**—बहुत; **प्रेम-सुखे**—दिव्य आनन्द में।

अनुवाद

**जब भगवान् चैतन्य अपने हाथ से जगन्नाथ पुरी में गुण्डिचा मन्दिर की सफाई करते थे, तब गोपाल बड़े प्रेम और मुदित भाव से महाप्रभु के समक्ष नाचता था।**

तात्पर्य

गुण्डिचा मन्दिर जगन्नाथ पुरी में स्थित है और प्रतिवर्ष जगन्नाथ, बलभद्र तथा सुभद्रा के विग्रह जगन्नाथ मन्दिर से निकलकर यहाँ आठ दिनों तक रुकते हैं। जब चैतन्य महाप्रभु जगन्नाथ पुरी में रह रहे थे, तब वे प्रतिवर्ष अपने प्रमुख भक्तों के साथ इस मन्दिर की सफाई करते थे। *चैतन्य-चरितामृत* के *गुण्डिचामार्जन* अध्याय में इसका स्पष्ट वर्णन हुआ है।

**नाना-भावोदगम देहे अद्भुत नर्तन ।**
**दुई गोसाञि 'हरि' बले, आनन्दित मन ॥ २१ ॥**
**नाना-भावोद्गम देहे अद्भुत नर्तन ।**
**दुइ गोसाञि 'हरि' बले, आनन्दित मन ॥ २१ ॥**

**नाना**—विविध; **भाव-उद्गम**—भाव चिह्न; **देहे**—शरीर में; **अद्भुत**—अद्भुत; **नर्तन**—नृत्य; **दुइ गोसाञि**—दोनों गोसांइ (चैतन्य महाप्रभु तथा अद्वैत प्रभु); **हरि बले**—हरे कृष्ण बोले; **आनन्दित**—आनन्दित हो गया; **मन**—मन।

अनुवाद

**जिस समय चैतन्य महाप्रभु तथा अद्वैत प्रभु हरे कृष्ण मन्त्र का कीर्तन करते तथा नाचते थे, तब उनके शरीरों में विविध भावातिरेक के लक्षण प्रकट होने लगते और उनके मन अत्यन्त प्रमुदित होते थे।**

**नाचिते नाचिते गोपाल हइल मूर्च्छित ।**
**भूमेते पड़िल, देहे नाहिक संवित ॥ २२ ॥**

**नाचिते नाचिते गोपाल हइल मूर्च्छित ।**
**भूमेते पड़िल, देहे नाहिक संवित ॥ २२ ॥**

**नाचिते**—नाचते; **नाचिते**—नाचते; **गोपाल**—अद्वैत प्रभु का पुत्र गोपाल; **हइल**—हो गये; **मूर्च्छित**—मूर्च्छित; **भूमेते**—भूमि पर; **पड़िल**—गिर गया; **देहे**—शरीर में; **नाहिक**—नहीं थी; **संवित**—चेतना।

अनुवाद

**जब वे सब नाच रहे थे, तब गोपाल नाचते-नाचते मूर्च्छित हो गया और भूमि पर गिरकर अचेत हो गया।**

দুঃখিত হইলা আচার্য পুত্র কোলে লঞা ।
রক্ষা করে নৃসিংহের মন্ত্র পড়িয়া ॥২৩॥

**दु:खित हइला आचार्य्र पुत्र कोले लञा ।**
**रक्षा करे नृसिंहेर मन्त्र पड़िया ॥ २३ ॥**

**दु:खित**—दुखित; **हइला**—हो गये; **आचार्य्र**—अद्वैत प्रभु; **पुत्र**—अपने पुत्र; **कोले**—गोद में; **लञा**—लेकर; **रक्षा**—रक्षा; **करे**—करते हैं; **नृसिंहेर**—भगवान् नृसिंह; **मन्त्र**—मंत्र; **पड़िया**—पढ़कर।

अनुवाद

**अद्वैत आचार्य प्रभु अत्यन्त दु:खी हुए। वे अपने पुत्र को अपनी गोद में उठाकर उसकी रक्षा के लिए नृसिंह-मन्त्र का उच्चारण करने लगे।**

নানা মন্ত্র পড়েন আচার্য, না হয় চেতন ।
আচার্যের দুঃখে বৈষ্ণব করেন ক্রন্দন ॥২৪॥

**नाना मन्त्र पड़ेन आचार्य्र, ना हय चेतन ।**
**आचार्य्रेर दु:खे वैष्णव करेन क्रन्दन ॥ २४ ॥**

**नाना**—नाना; **मन्त्र**—मन्त्र; **पड़ेन**—पढ़ते हैं; **आचार्य्र**—अद्वैत आचार्य; **ना**—नहीं; **हय**—हुई; **चेतन**—चेतना; **आचार्य्रेर**—अद्वैत आचार्य के; **दु:खे**—दु:ख में; **वैष्णव**—सभी वैष्णव; **करेन**—करते हैं; **क्रन्दन**—रोना, क्रन्दन।

अनुवाद

**अद्वैत आचार्य ने विविध मन्त्रों का उच्चारण किया, किन्तु गोपाल को**

**होश नहीं आया। अतएव वहाँ पर उपस्थित सारे वैष्णव उनकी व्यथा से शोकातुर होकर रोने लगे।**

তবে মহাপ্রভু, তাঁর হৃদে হস্ত ধরি' ।
'উঠহ, গোপাল,' কৈল বল 'হরি' 'হরি' ॥২৫॥

**তবে মহাপ্রভু, তাঁর হৃদে হস্ত ধরি' ।**
**'উঠহ, গোপাল,' কৈল বল 'হরি' 'হরি' ॥ ২৫ ॥**

**তবে**—उस समय; **মহাপ্রভু**—चैतन्य महाप्रभु; **তাঁর**—उनके; **হৃদে**—हृदय पर; **হস্ত**—हाथ; **ধরি'**—रखकर; **উঠহ**—उठो; **গোপাল**—मेरे प्रिय गोपाल; **কৈল**—कहा; **বল**—बोलो; **হরি হরি**—हरि हरि।

अनुवाद

**तब चैतन्य महाप्रभु ने गोपाल की छाती पर अपना हाथ रखा और उससे कहा, "प्रिय गोपाल! उठो और भगवान् के पवित्र नाम का कीर्तन करो!"**

উঠিল গোপাল প্রভুর স্পর্শ-ধ্বনি শুনি' ।
আনন্দিত হঞা সবে করে হরি-ধ্বনি ॥২৬॥

**উঠিল গোপাল প্রভুর স্পর্শ-ধ্বনি শুনি' ।**
**আনন্দিত হঞা সবে করে হরি-ধ্বনি ॥ ২৬ ॥**

**উঠিল**—उठ पड़ा; **গোপাল**—गोपाल; **প্রভুর**—महाप्रभु का; **স্পর্শ**—स्पर्श; **ধ্বনি**—ध्वनि; **শুনি'**—सुनकर; **আনন্দিত**—प्रसन्न होकर; **হঞা**—होकर; **সবে**—सबने; **করে**—किया; **হরি-ধ্বনি**—हरे कृष्ण महामंत्र का संकीर्तन।

अनुवाद

**जब गोपाल ने महाप्रभु की आवाज सुनी और उनके स्पर्श का अनुभव किया, तो वह तुरन्त उठ पड़ा और सारे वैष्णव खुशी में हरे कृष्ण महामन्त्र का कीर्तन करने लगे।**

আচার্যের আর পুত্র—শ্রী-বলরাম ।
আর পুত্র—'স্বরূপ'-শাখা, 'জগদীশ' নাম ॥২৭॥

**आचार्य्येर आर पुत्र—श्री-बलराम ।**
**आर पुत्र—'स्वरूप'-शाखा, 'जगदीश' नाम ॥ २७॥**

**आचार्य्येर**—श्रील अद्वैत आचार्य का; **आर**—एक अन्य; **पुत्र**—पुत्र; **श्री-बलराम**—श्री बलराम; **आर पुत्र**—और एक पुत्र; **स्वरूप**—स्वरूप; **शाखा**—शाखा; **जगदीश नाम**—जगदीश नाम का।

अनुवाद

**अद्वैत आचार्य के अन्य पुत्र श्री बलराम, स्वरूप तथा जगदीश थे।**

तात्पर्य

*अद्वैत-चरित* नामक संस्कृत ग्रन्थ में लिखा है कि बलराम, स्वरूप तथा जगदीश अद्वैत आचार्य के चौथे, पाँचवें तथा छठे पुत्र थे। इस तरह उनके छः पुत्र थे। ये तीनों स्मार्त या मायावादी थे, अतएव वैष्णव समाज द्वारा परित्यक्त थे। कभी-कभी मायावादी वैष्णव अर्थात् विष्णु-भक्त होने का ढोंग करते हैं, किन्तु वास्तव में वे विष्णु को पूर्ण पुरुषोत्तम परमेश्वर नहीं मानते, क्योंकि वे शिव, दुर्गा, सूर्यदेव तथा गणेश को परमेश्वर तुल्य समझते हैं। ये लोग सामान्यतया *पञ्चोपासक स्मार्त* कहलाते हैं, अतएव इनकी गणना वैष्णवों में नहीं की जानी चाहिए।

बलराम की तीन पत्नियाँ तथा नौ पुत्र थे। पहली पत्नी से उत्पन्न उनके सबसे छोटे पुत्र का नाम मधुसूदन गोस्वामी था। उन्होंने भट्टाचार्य उपाधि ग्रहण की और स्मार्त-पंथ या मायावादी दर्शन स्वीकार किया। श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर लिखते हैं कि गोस्वामी भट्टाचार्य के पुत्र श्री राधारमण गोस्वामी भट्टाचार्य ने गोस्वामी की पदवी अस्वीकार कर दी, क्योंकि यह सामान्यतया संन्यासियों की सूचक पदवी है। जो व्यक्ति अब भी गृहस्थाश्रम में हो, उसे *गोस्वामी* पदवी का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर ने जाति से गोस्वामी लोगों को मान्यता नहीं दी है, क्योंकि वे उन छः गोस्वामियों की पंक्ति में नहीं थे, जो चैतन्य महाप्रभु के प्रत्यक्ष शिष्य थे। इन छः गोस्वामियों के नाम थे—श्रील रूप गोस्वामी, श्रील सनातन गोस्वामी, श्रील भट्ट रघुनाथ गोस्वामी, श्री गोपाल भट्ट गोस्वामी, श्री जीव गोस्वामी तथा श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी। श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर ने कहा है कि

गृहस्थ आश्रम तो इन्द्रियतृप्ति के लिए एक प्रकार की छूट है। अतएव गृहस्थ को चाहिए कि वह झूठे ही गोस्वामी पदवी ग्रहण न करे। इस्कॉन आन्दोलन ने कभी-भी गोस्वामी की पदवी किसी गृहस्थ को प्रदान नहीं की है। यद्यपि इस्कॉन में दीक्षित सारे संन्यासी तरुण हैं, किन्तु हमने उन्हें *स्वामी* एवं गोस्वामी पदवियाँ इसलिए प्रदान की हैं, क्योंकि श्री चैतन्य सम्प्रदाय का प्रचार करने के लिए उन्होंने अपना जीवन समर्पित कर दिया है। श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर उल्लेख करते हैं कि गृहस्थ जाति-गोस्वामी न केवल गोस्वामी उपाधि का अनादर करते हैं, अपितु स्मार्त रघुनन्दन के सिद्धान्तों पर चलते हुए श्राद्धकर्म के समय वे अद्वैत आचार्य का तिनके का पुतला जलाकर मूर्खता का प्रदर्शन करते हैं और इस तरह राक्षसी कर्म करते हैं तथा वैष्णवों के मार्गदर्शक *हरिभक्ति-विलास* का अनादर करते हैं। श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर कहते हैं कि कभी-कभी ये स्मार्त जाति-गोस्वामी वैष्णव दर्शन पर पुस्तकें लिखते हैं या मूल शास्त्रों की टीकाएँ लिखते हैं, किन्तु शुद्ध भक्तों को चाहिए कि इनको पढ़ने से अपने आपको सावधानीपूर्वक बचायें।

**'कमलाकान्त विश्वास'-नाम आचार्य-किङ्कर ।**
**आचार्य-व्यवहार सब——ताँहार गोचर ॥ २८॥**

**'कमलाकान्त विश्वास'-नाम आचार्य्र-किङ्कर ।**
**आचार्य्र-व्यवहार सब——ताँहार गोचर ॥ २८॥**

**कमलाकान्त विश्वास**—कमलाकान्त विश्वास; **नाम**—नाम का; **आचार्य्र-किङ्कर**—अद्वैत आचार्य का सेवक; **आचार्य्र-व्यवहार**—अद्वैत आचार्य के व्यवहार; **सब**—सब; **ताँहार**—उनके; **गोचर**—ज्ञान में।

### अनुवाद

**आचार्य अद्वैत का अत्यन्त विश्वासपात्र नौकर कमलाकान्त विश्वास अद्वैत आचार्य के सारे आचारों-व्यवहारों को जानता था।**

### तात्पर्य

आदिलीला (१०.१४९) में उल्लिखित कमलानन्द तथा मध्यलीला (१०.९४) में उल्लिखित कमलाकान्त एक ही व्यक्ति हैं। कमलाकान्त चैतन्य

महाप्रभु का अत्यन्त विश्वस्त सेवक था; वह ब्राह्मण कुल में उत्पन्न था और अद्वैत आचार्य के निजी सचिव के रूप में कार्य करता था। जब परमानन्द पुरी नवद्वीप से जगन्नाथ पुरी गये, तब वे अपने साथ कमलाकान्त विश्वास को लेते गये और वे दोनों चैतन्य महाप्रभु का दर्शन करने जगन्नाथ पुरी गये। मध्यलीला (१०.९४) में उल्लेख है कि चैतन्य महाप्रभु का एक ब्राह्मण-भक्त कमलाकान्त परमानन्द पुरी के साथ जगन्नाथ पुरी गया।

नीलाचले तेँहो एक पत्रिका लिखिया ।
प्रतापरुद्रेर पाश दिल पाठाइया ॥२९॥
**नीलाचले तेंहो एक पत्रिका लिखिया ।**
**प्रतापरुद्रेर पाश दिल पाठाइया ॥ २९ ॥**

**नीलाचले**—जगन्नाथ पुरी में; **तेंहो**—कमलाकान्त; **एक**—एक; **पत्रिका**—पत्र; **लिखिया**—लिखकर; **प्रतापरुद्रेर**—प्रतापरुद्र महाराज; **पाश**—उनको सम्बोधित करके; **दिल पाठाइया**—भेजा।

अनुवाद

**जब कमलाकान्त विश्वास जगन्नाथ पुरी में था, तो उसने किसी के हाथों एक चिट्ठी महाराज प्रतापरुद्र के पास भेजी।**

सेइ पत्रीर कथा आचार्य नाहि जाने ।
कोन पाके सेइ पत्री आइल प्रभु-स्थाने ॥३०॥
**सेइ पत्रीर कथा आचार्य्र नाहि जाने ।**
**कोन पाके सेइ पत्री आइल प्रभु-स्थाने ॥ ३० ॥**

**सेइ पत्रीर**—उस पत्र की; **कथा**—सूचना; **आचार्य्र**—श्री अद्वैत आचार्य; **नाहि**—नहीं; **जाने**—जानते थे; **कोन**—किसी प्रकार; **पाके**—किसी साधन से; **सेइ**—वह; **पत्री**—पत्रिका; **आइल**—आ गई; **प्रभु-स्थाने**—चैतन्य महाप्रभु के हाथ में।

अनुवाद

**किसी को इस चिट्ठी के विषय में पता नहीं था, किन्तु यह चिट्ठी किसी तरह श्री चैतन्य महाप्रभु के हाथ लग गई।**

সে পত্রীতে লেখা আছে—এই ত' লিখন ।
ঈশ্বরত্বে আচার্যেরে করিয়াছে স্থাপন ॥৩১॥

**से पत्रीते लेखा आछे—एइ त' लिखन ।**
**ईश्वरत्वे आचार्य्येरे करियाछे स्थापन ॥ ३१ ॥**

**से**—उस; **पत्रीते**—चिट्ठी में; **लेखा आछे**—लिखा है; **एइ त'**—यह; **लिखन**—लिखा; **ईश्वरत्वे**—परम भगवान् की जगह में; **आचार्य्येरे**—अद्वैत आचार्य को; **करियाछे**—स्थापित किया; **स्थापन**—स्थिति।

अनुवाद

**इस चिट्ठी में यह प्रमाणित किया गया था कि अद्वैत आचार्य भगवान् के अवतार हैं।**

কিন্তু তাঁর দৈবে কিছু হইয়াছে ঋণ ।
ঋণ শোধিবারে চাহি তঙ্কা শত-তিন ॥৩২॥

**किन्तु ताँर दैवे किछु हइयाछे ऋण ।**
**ऋण शोधिबारे चाहि तङ्का शत-तिन ॥ ३२ ॥**

**किन्तु**—किन्तु; **ताँर**—उनका; **दैवे**—यथा समय; **किछु**—कुछ; **हइयाछे**—था; **ऋण**—ऋण; **ऋण**—ऋण; **शोधिबारे**—चुकाने के लिए; **चाहि**—मैं चाहता हूँ; **तङ्का**—रुपये; **शत-तिन**—लगभग तीन सौ।

अनुवाद

**किन्तु साथ ही यह भी उल्लेख था कि अद्वैत आचार्य के ऊपर हाल ही में तीन सौ रुपये का ऋण चढ़ गया है, कमलाकान्त विश्वास जिसको चुकाना चाहता है।**

পত্র পড়িয়া প্রভুর মনে হৈল দুঃখ ।
বাহিরে হাসিয়া কিছু বলে চন্দ্র-মুখ ॥৩৩॥

**पत्र पड़िया प्रभुर मने हैल दुःख ।**
**बाहिरे हासिया किछु बले चन्द्र-मुख ॥ ३३ ॥**

**पत्र**—पत्रिका; **पड़िया**—पढ़कर; **प्रभुर**—चैतन्य महाप्रभु के; **मने**—मन में; **हैल**—हो

गया; **दुःख**—दुःख; **बाहिरे**—बाहर से; **हासिया**—मुस्कुराकर; **किछु**—कुछ; **बले**—कहते हैं; **चन्द्र-मुख**—चन्द्रमुख।

अनुवाद

**चैतन्य महाप्रभु यह चिट्ठी पढ़कर अत्यन्त दुःखी हुए, यद्यपि ऊपर से उनका मुख अब भी चन्द्रमा के समान चमक रहा था। इस प्रकार हँसते हुए महाप्रभु ने यह कहा।**

আচার্যেরে স্থাপিয়াছে করিয়া ঈশ্বর ।
ইথে দোষ নাহি, আচার্য—দৈবত ঈশ্বর ॥ ৩৪ ॥

**आचार्य्येरे स्थापियाछे करिया ईश्वर ।**
**इथे दोष नाहि, आचार्य्य—दैवत ईश्वर ॥ ३४॥**

**आचार्य्येरे**—अद्वैत आचार्य को; **स्थापियाछे**—उन्होंने स्थापित किया; **करिया**—उल्लेख करके; **ईश्वर**—भगवान् के रूप में; **इथे**—इसमें; **दोष**—दोष; **नाहि**—नहीं है; **आचार्य्य**—अद्वैत आचार्य; **दैवत ईश्वर**—वे वास्तव में भगवान् हैं।

अनुवाद

**"उसने अद्वैत आचार्य को भगवान् के अवतार के रूप में स्थापित कर दिया है। इसमें कोई दोष नहीं है, क्योंकि वे सचमुच साक्षात् भगवान् हैं।**

ঈশ্বরের দৈন্য করি' করিয়াছে ভিক্ষা ।
অতএব দণ্ড করি' করাইব শিক্ষা ॥ ৩৫ ॥

**ईश्वरेर दैन्य करि' करियाछे भिक्षा ।**
**अतएव दण्ड करि' कराइब शिक्षा ॥ ३५॥**

**ईश्वरेर**—भगवान् की; **दैन्य**—निर्धनता; **करि'**—स्थापित करके; **करियाछे**—किया है; **भिक्षा**—भिक्षा; **अतएव**—अतएव; **दण्ड**—दण्ड; **करि'**—उसे देकर; **कराइब**—दूँगा; **शिक्षा**—उपदेश।

अनुवाद

**"किन्तु उसने भगवान् के अवतार को निर्धनता-ग्रस्त भिक्षुक बना दिया है, अतएव मैं उसकी इस भूल को सुधारने के लिए उसे पाठ पढ़ाऊँगा।"**

### तात्पर्य

किसी व्यक्ति को ईश्वर या नारायण का अवतार कहना और साथ ही साथ उसे गरीबी से त्रस्त बतलाना विरोधात्मक है और यह सबसे बड़ा अपराध भी है। मायावादी दार्शनिक यह प्रचार करने में लगे हुए हैं कि हर व्यक्ति ईश्वर है और वे वैदिक संस्कृति को विनष्ट कर रहे हैं। ये गरीब मनुष्य को *दरिद्रनारायण* कहकर वर्णन करते हैं। चैतन्य महाप्रभु को कभी-भी ऐसे मूर्ख और अप्रामाणिक विचार स्वीकार नहीं थे। उन्होंने दृढ़तापूर्वक आगाह किया है—*मायावादी भाष्य शुनिले हय सर्वनाश*—"जो कोई मायावादी दर्शन का अनुगमन करता है, समझ लो उसका विनाश हो चुका।" ऐसे मूर्ख को दण्डित करके सुधारे जाने की आवश्यकता है।

यद्यपि यह कहना विरोधमूलक है कि भगवान् या उनका अवतार दरिद्र है, किन्तु शास्त्रों में हम पाते हैं कि जब भगवान् वामन के रूप में अवतरित हुए, तब उन्होंने महाराज बलि से कुछ भूमि माँगी। किन्तु हर कोई यह जानता है कि वामनदेव जरा भी दरिद्र न थे। महाराज बलि से कुछ भिक्षा माँगना तो उन पर कृपा करने की एक युक्ति थी। जब महाराज बलि ने सचमुच भूमि दे दी, तो वामनदेव ने अपने सर्वशक्तिमान पद का प्रदर्शन तीनों लोकों को अपने तीन चरणों से नापकर किया। हमें चाहिए कि ऐसे तथाकथित दरिद्रनारायणों को अवतार न मानें, क्योंकि ये ईश्वर के असली अवतारों के ऐश्वर्य को प्रदर्शित करने में पूर्णतया अक्षम रहते हैं।

গোবিন্দেরে আজ্ঞা দিল,—''ইঁহা আজি হৈতে ।
বাউলিয়া বিশ্বাসে এথা না দিবে আসিতে'' ॥৩৬॥

**गोविन्देरे आज्ञा दिल,—"इँहा आजि हैते ।**
**बाउलिया विश्वासे एथा ना दिबे आसिते" ॥ ३६ ॥**

**गोविन्देरे**—गोविन्द को; **आज्ञा दिल**—आज्ञा दी; **इँहा**—इस स्थान में; **आजि**—आज; **हैते**—से; **बाउलिया**—मायावादी; **विश्वासे**—कमलाकान्त विश्वास को; **एथा**—यहाँ; **ना**—न; **दिबे**—अनुमति दो; **आसिते**—आने की।

अनुवाद

**महाप्रभु ने गोविन्द को आज्ञा दी, "आज से उस बाउलिया कमलाकान्त विश्वास को यहाँ मत आने देना।"**

तात्पर्य

बाउलिया या बाउल उन तेरह अवैध सम्प्रदायों में से एक है, जो अपने आपको चैतन्य महाप्रभु के अनुयायी बतलाते हैं। महाप्रभु ने अपने निजी सहायक गोविन्द को आज्ञा दी कि कमलकान्त विश्वास को उनके सामने न आने दिया जाए, क्योंकि वह बाउलिया बन गया है। इस तरह भले ही बाउल सम्प्रदाय, आउल सम्प्रदाय तथा सहजिया सम्प्रदाय के साथ-साथ स्मार्त, जात-गोसांइ, अतिवाड़ी, चूड़ाधारी तथा गौरांग-नागरी लोग अपने आपको चैतन्य महाप्रभु की परम्परा में बतलाते हैं, किन्तु महाप्रभु ने उन सबका वास्तव में बहिष्कार किया था।

**दण्ड शुनि' 'विश्वास' हइल परम दुःखित ।**
**शुनिया प्रभुर दण्ड आचार्य हर्षित ॥ ३७॥**
**दण्ड शुनि' 'विश्वास' हइल परम दुःखित ।**
**शुनिया प्रभुर दण्ड आचार्य्य हर्षित ॥ ३७॥**

**दण्ड**—दण्ड; **शुनि'**—सुनकर; **विश्वास**—कमलाकान्त विश्वास; **हइल**—हो गया; **परम**—अत्यन्त; **दुःखित**—दुःखी; **शुनिया**—सुनकर; **प्रभुर**—चैतन्य महाप्रभु का; **दण्ड**—दण्ड; **आचार्य्य**—श्री अद्वैत आचार्य प्रभु; **हर्षित**—अत्यन्त प्रसन्न हुए।

अनुवाद

**जब कमलाकान्त विश्वास ने श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा दिये गये इस दण्ड के बारे में सुना, तो वह बहुत दुःखी हुआ, किन्तु जब अद्वैत प्रभु ने इसके बारे में सुना, तो वे अत्यन्त प्रसन्न हुए।**

तात्पर्य

*भगवद्गीता* (९.२९) में भगवान् कहते हैं—*समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः*—"न मैं किसी से द्वेष करता हूँ, न किसी का पक्षपात करता हूँ। मैं सबके प्रति समभाव रखता हूँ।" चूँकि पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् सबके लिए सम हैं, अतएव न तो उनका कोई शत्रु है, न कोई मित्र। चूँकि

प्रत्येक जीव पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् का अंश या पुत्र है, अतएव वे किसी का पक्षपात करके न तो उसे शत्रु मान सकते हैं न मित्र। अतएव जब महाप्रभु ने कमलाकान्त विश्वास को दण्ड दिया कि वह उनके पास न आये, तो यह दण्ड उसके लिए अत्यन्त कठोर था, किन्तु अद्वैत आचार्य इस दण्ड का आन्तरिक आशय समझकर प्रसन्न थे; क्योंकि वे समझ गये थे कि महाप्रभु ने वास्तव में कमलाकान्त विश्वास पर कृपा की है। इसीलिए वे तनिक भी दु:खी नहीं हुए थे। भक्तों को चाहिए कि अपने स्वामी पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के सारे व्यवहारों से सदैव प्रसन्न रहें। भक्त भले ही विपत्ति आये या संपत्ति प्राप्त करे, किन्तु उसे भगवान् के इन उपहारों को स्वीकार करना चाहिए और सभी परिस्थितियों में हँसी-खुशी भगवान् की सेवा में लगे रहना चाहिए।

विश्वासेरे कहे,—तुमि बड़ भाग्यवान् ।
तोमारे करिल दण्ड प्रभु भगवान् ॥३८॥

**विश्वासेरे कहे,—तुमि बड़ भाग्यवान् ।**
**तोमारे करिल दण्ड प्रभु भगवान् ॥ ३८ ॥**

**विश्वासेरे**—कमलाकान्त विश्वास को; **कहे**—कहा; **तुमि**—तुम; **बड़**—अत्यन्त; **भाग्यवान्**—भाग्यवान्; **तोमारे**—तुम्हें; **करिल**—किया; **दण्ड**—दण्ड; **प्रभु**—महाप्रभु ने; **भगवान्**—भगवान् ने।

### अनुवाद

**कमलाकान्त विश्वास को अप्रसन्न देखकर अद्वैत आचार्य प्रभु ने उससे कहा, "तुम परम भाग्यशाली हो कि भगवान् चैतन्य महाप्रभु द्वारा दण्डित हुए हो।**

### तात्पर्य

यह श्री अद्वैत आचार्य का प्रामाणिक निर्णय है। उन्होंने स्पष्ट सलाह दी है कि जब पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् की आज्ञा से किसी पर विपत्तियाँ आयें, तो उसे दु:खी नहीं होना चाहिए। भक्त को भगवान् द्वारा प्रदान की गई सम्पत्ति को ग्रहण करके प्रसन्न होना चाहिए, भले ही यह उसके हिसाब से अनुकूल या प्रतिकूल ही क्यों न लगे।

पूर्वे महाप्रभु मोरे करेन सम्मान ।
दुःख पाइ' मने आमि कैलुँ अनुमान ॥३९॥

**पूर्वे महाप्रभु मोरे करेन सम्मान ।**
**दुःख पाइ' मने आमि कैलुँ अनुमान ॥ ३९ ॥**

**पूर्वे**—पहले; **महाप्रभु**—चैतन्य महाप्रभु; **मोरे**—मुझे; **करेन**—करते थे; **सम्मान**—सम्मान; **दुःख**—दुःख; **पाइ'**—पाकर; **मने**—मन में; **आमि**—मैंने; **कैलुँ**—की; **अनुमान**—योजना।

अनुवाद

**"पहले तो चैतन्य महाप्रभु अपने वरिष्ठ की तरह मेरा आदर करते थे, किन्तु मुझे ऐसा आदर पसन्द न था। अतएव मेरा मन दुखित होने के कारण मैंने एक योजना बनाई थी।**

मुक्ति—श्रेष्ठ करि' कैनु वाशिष्ठ व्याख्यान ।
क्रुद्ध हञा प्रभु मोरे कैल अपमान ॥४०॥

**मुक्ति—श्रेष्ठ करि' कैनु वाशिष्ठ व्याख्यान ।**
**क्रुद्ध हञा प्रभु मोरे कैल अपमान ॥ ४० ॥**

**मुक्ति**—मुक्ति; **श्रेष्ठ**—श्रेष्ठ; **करि'**—स्वीकार करके; **कैनु**—मैंने किया; **वाशिष्ठ**—योग वाशिष्ठ नामक पुस्तक; **व्याख्यान**—व्याख्यान; **क्रुद्ध**—क्रुद्ध; **हञा**—होकर; **प्रभु**—महाप्रभु; **मोरे**—मेरा; **कैल**—किया; **अपमान**—अपमान।

अनुवाद

**"मैंने मुक्ति को जीवन का चरम लक्ष्य मानने वाले ग्रंथ योगवाशिष्ठ की व्याख्या की, इसीलिए महाप्रभु मुझ पर क्रुद्ध हुए और उन्होंने मेरे प्रति दिखावटी असम्मान प्रदर्शित किया।**

तात्पर्य

योगवाशिष्ठ नामक ग्रंथ को मायावादी अत्यधिक महत्त्व देते हैं, क्योंकि यह पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् विषयक निर्विशेष भ्रान्तियों से भरा है। इसमें वैष्णवता का लेश मात्र भी स्पर्श नहीं है। असल में सारे वैष्णवों को ऐसी पुस्तक से बचना चाहिए, किन्तु अद्वैत आचार्य प्रभु चाहते थे कि महाप्रभु उन्हें

दण्ड दें, इसलिए वे योगवाशिष्ठ के निर्विशेषवादी कथनों का समर्थन करने लगे। इसलिए भगवान् चैतन्य महाप्रभु उन पर क्रुद्ध हो गये और एक तरह से महाप्रभु ने उनका अपमान किया।

दण्ड पाञा हैल मोर परम आनन्द ।
ये दण्ड पाइल भाग्यवान्श्री-मुकुन्द ॥४१॥

दण्ड पाञा हैल मोर परम आनन्द ।
ग्रे दण्ड पाइल भाग्यवान्श्री-मुकुन्द ॥४१॥

**दण्ड पाञा**—दण्ड पाकर; **हैल**—हो गया; **मोर**—मेरा; **परम**—परम; **आनन्द**—आनन्द; **ग्रे दण्ड**—दण्ड; **पाइल**—पाकर; **भाग्यवान्**—भाग्यशाली; **श्री-मुकुन्द**—श्री मुकुन्द।

### अनुवाद

**"चैतन्य महाप्रभु से प्रताड़ित होकर मैं परम प्रसन्न हुआ कि मुझे भी श्री मुकुन्द जैसा दण्ड प्राप्त हुआ है।"**

### तात्पर्य

श्री मुकुन्द चैतन्य महाप्रभु के अच्छे मित्र एवं संगी थे और वे ऐसे अनेक स्थानों में जाते रहते थे, जहाँ के लोग वैष्णव-सम्प्रदाय के विरुद्ध थे। जब श्री चैतन्य महाप्रभु को इसका पता चला, तो उन्होंने मुकुन्द को दण्ड दिया और उन्हें अपना मुँह दिखाने से मना कर दिया। यद्यपि चैतन्य महाप्रभु फूल के समान कोमल थे, किन्तु वे वज्र के समान कठोर भी थे और हर व्यक्ति मुकुन्द को श्री चैतन्य महाप्रभु के समक्ष भेजने में भय खाता था। इसलिए मुकुन्द ने अत्यधिक दुःखी होने के कारण अपने मित्रों से पूछा कि क्या कभी उसे महाप्रभु का दर्शन करने दिया जायेगा या नहीं। जब भक्तगण यह प्रश्न लेकर महाप्रभु के पास पहुँचे तो उन्होंने उत्तर दिया, "मुकुन्द लाखों वर्षों बाद मेरा दर्शन करने की अनुमति पा सकेगा।" जब लोगों ने यह जानकारी मुकुन्द को दी, तो वह हर्ष से नाचने लगा और जब महाप्रभु ने सुना कि लाखों वर्षों बाद दर्शन पाने के लिए वह धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर रहा है, तो उन्होंने उसे तुरन्त वापस आने को कहा। *चैतन्य-भागवत* मध्यखण्ड दसवें अध्याय में मुकुन्द के दण्ड से सम्बन्धित एक कथन है।

যে দণ্ড পাইল শ্রী-শচী ভাগ্যবতী ।
সে দণ্ড প্রসাদ অন্য লোক পাবে কতি ॥৪২॥

**য়ে দণ্ড পাইল শ্রী-শচী ভাগ্যবতী ।**
**সে দণ্ড প্রসাদ অন্য লোক পাবে কতি ॥ ৪২ ॥**

**য়ে দণ্ড**—दण्ड; **पाइल**—पाया; **श्री-शची भाग्यवती**—परम भाग्यवती माता शचीदेवी; **से दण्ड**—वही दण्ड; **प्रसाद**—कृपा; **अन्य**—अन्य; **लोक**—व्यक्ति; **पाबे**—पा सकते हैं; **कति**—कैसे।

अनुवाद

**"ऐसा ही दण्ड माता शचीदेवी को मिला था। भला ऐसा दण्ड पाने में उनसे अधिक और कौन भाग्यवान हो सकेगा?"**

तात्पर्य

*चैतन्य-भागवत* मध्यखण्ड, अध्याय बाईस में उल्लेख है कि माता शचीदेवी को इसी प्रकार का दण्ड मिला था। माता शचीदेवी ने अपनी स्त्री-प्रकृति दिखलाते हुए आरोप लगाया था कि अद्वैत प्रभु ने उनके पुत्र को संन्यासी बनने के लिए उकसाया है। चैतन्य महाप्रभु ने इस आरोप को अपराध मानते हुए शचीदेवी से कहा कि वे अपना अपराध मिटाने के लिए अद्वैत प्रभु के चरणकमलों का स्पर्श करें।

এত কহি' আচার্য তাঁরে করিয়া আশ্বাস ।
আনন্দিত হইয়া আইল মহাপ্রভু-পাশ ॥৪৩॥

**এত কহি' আচার্য্য তাঁরে করিয়া আশ্বাস ।**
**আনন্দিত হইয়া আইল মহাপ্রভু-পাশ ॥ ৪৩ ॥**

**एत कहि'**—इस प्रकार कहकर; **आचार्य्य**—श्री अद्वैत आचार्य प्रभु; **ताँरे**—कमलाकान्त विश्वास को; **करिया**—करके; **आश्वास**—आश्वासन; **आनन्दित**—प्रसन्न; **हइया**—होकर; **आइल**—गये; **महाप्रभु-पाश**—चैतन्य महाप्रभु के पास।

अनुवाद

**इस प्रकार से कमलाकान्त को आश्वासन देने के बाद श्री अद्वैत आचार्य प्रभु श्री चैतन्य महाप्रभु का दर्शन करने गये।**

प्रभुके कहेन——तोमार ना बुझि ए लीला ।
आमा हैते प्रसाद-पात्र करिला कमला ॥ ४४॥

**प्रभुके कहेन——तोमार ना बुझि ए लीला ।**
**आमा हैते प्रसाद-पात्र करिला कमला ॥ ४४॥**

**प्रभुके**—महाप्रभु को; **कहेन**—कहते हैं; **तोमार**—आपकी; **ना**—नहीं; **बुझि**—मैं समझता हूँ; **ए**—ये; **लीला**—लीलाएँ; **आमा**—मुझसे; **हैते**—अधिक; **प्रसाद-पात्र**—कृपा पात्र; **करिला**—आपने किया; **कमला**—कमलाकान्त विश्वास को।

अनुवाद

**श्री अद्वैत आचार्य ने भगवान् चैतन्य से कहा, "आपकी दिव्य लीलाएँ मेरी समझ में नहीं आ सकतीं। आप मुझ पर जितनी कृपा करते हैं, उससे अधिक कृपा आपने कमलाकान्त पर की है।**

आमारेह कभु येई ना हय प्रसाद ।
तोमार चरणे आमि कि कैनु अपराध ॥ ४५॥

**आमारेह कभु येइ ना हय प्रसाद ।**
**तोमार चरणे आमि कि कैनु अपराध ॥ ४५॥**

**आमारेह**—मुझ पर भी; **कभु**—कभी भी; **येइ**—वह; **ना**—कभी नहीं; **हय**—होती है; **प्रसाद**—कृपा; **तोमार चरणे**—आपके चरणकमलों पर; **आमि**—मैं; **कि**—क्या; **कैनु**—किया है; **अपराध**—अपराध।

अनुवाद

**"आपने कमलाकान्त पर जो कृपा की है, वह इतनी महान् है कि आपने मुझ पर कभी भी ऐसी कृपा नहीं की। भला मैंने आपके चरणकमलों पर कौन-सा ऐसा अपराध किया है कि आपने ऐसी कृपा मुझ पर नहीं दिखलाई?"**

तात्पर्य

यहाँ पर अद्वैत आचार्य को पहले जो दण्ड दिया गया है, उसका सन्दर्भ है। जब अद्वैत आचार्य प्रभु *योगवाशिष्ठ* पढ़ रहे थे, तब चैतन्य महाप्रभु ने उन्हें पीटा था, किन्तु उन्होंने कभी यह नहीं कहा था कि आप मेरे पास कभी मत

आना। किन्तु कमलाकान्त को यह आदेश मिला था कि वह कभी उनके पास न आये। इसलिए श्री अद्वैत आचार्य प्रभु चैतन्य महाप्रभु को यह बतलाना चाह रहे थे कि उन्होंने कमलाकान्त विश्वास पर अधिक कृपा की है, क्योंकि उसे अपने पास आने से मना कर दिया है, जबकि उनके साथ उन्होंने वैसा नहीं किया। इसलिए कमलाकान्त के प्रति प्रदर्शित कृपा अद्वैत आचार्य पर की गई कृपा से बढ़कर थी।

**এত শুনি' মহাপ্রভু হাসিতে লাগিলা ।**
**বোলাইয়া কমলাকান্তে প্রসন্ন হইলা ॥ ৪৬॥**

**एत शुनि' महाप्रभु हासिते लागिला ।**
**बोलाइया कमलाकान्ते प्रसन्न हइला ॥ ४६ ॥**

**एत शुनि'**—यह सुनकर; **महाप्रभु**—चैतन्य महाप्रभु; **हासिते**—हंसने; **लागिला**—लगे; **बोलाइया**—बुलाना; **कमलाकान्ते**—कमलाकान्त को; **प्रसन्न**—प्रसन्न, सन्तुष्ट; **हइला**—होकर।

अनुवाद

**यह सुनकर चैतन्य महाप्रभु हर्षित होकर हँसने लगे और तुरन्त ही उन्होंने कमलाकान्त विश्वास को बुलाया।**

**আচার্য কহে, ইহাকে কেনে দিলে দরশন ।**
**দুই প্রকারেতে করে মোরে বিড়ম্বন ॥ ৪৭॥**

**आचार्य कहे, इहाके केने दिले दरशन ।**
**दुइ प्रकारेते करे मोरे विड़म्बन ॥ ४७॥**

**आचार्य कहे**—श्री अद्वैत आचार्य ने कहा; **इहाके**—उसको; **केने**—क्यों; **दिले**—आपने दिया; **दरशन**—दर्शन; **दुइ**—दो; **प्रकारेते**—प्रकार से; **करे**—करते हैं; **मोरे**—मुझको; **विड़म्बन**—धोखेबाजी।

अनुवाद

**तब अद्वैत आचार्य ने चैतन्य महाप्रभु से कहा, "आपने इस व्यक्ति को फिर से क्यों बुलाया और इसे अपने दर्शन की क्यों अनुमति दी है? इसने तो मुझे दो प्रकार से धोखा दिया है।"**

শুনিয়া প্রভুর মন প্রসন্ন হইল ।
দুঁহার অন্তর-কথা দুঁহে সে জানিল ॥ ৪৮ ॥

**शुनिया प्रभुर मन प्रसन्न हइल ।**
**दुँहार अन्तर-कथा दुँहे से जानिल ॥ ४८ ॥**

**शुनिया**—यह सुनकर; **प्रभुर**—चैतन्य महाप्रभु का; **मन**—मन; **प्रसन्न**—सन्तुष्ट; **हइल**—हो गया; **दुँहार**—उन दोनों की; **अन्तर-कथा**—गुप्त बातें; **दुँहे**—वे दोनों; **से**—वह; **जानिल**—समझ सके।

अनुवाद

**जब चैतन्य महाप्रभु ने यह सुना, तो उनका मन प्रसन्न हो गया। केवल वे ही एक दूसरे के मन की बातें समझ सकते थे।**

প্রভু কহে—বাউলিয়া, ঐছে কাহে কর ।
আচার্যের লজ্জা-ধর্ম-হানি সে আচর ॥ ৪৯ ॥

**प्रभु कहे—बाउलिया, ऐछे काहे कर ।**
**आचार्य्यैर लज्जा-धर्म-हानि से आचर ॥ ४९ ॥**

**प्रभु कहे**—महाप्रभु ने कहा; **बाउलिया**—वह जो यह नहीं जानता कि सही क्या है; **ऐछे**—उस तरह; **काहे**—क्यों; **कर**—करते हो; **आचार्य्यैर**—श्री अद्वैत आचार्य का; **लज्जा**—गोपनीयता; **धर्म**—धर्म; **हानि**—हानि; **से**—वह; **आचर**—तुम कार्य करते हो।

अनुवाद

**श्री चैतन्य महाप्रभु ने कमलाकान्त को समझाया, "तुम तो बाउलिया हो, जिसको वस्तुओं की सही स्थिति के बारे में ज्ञान नहीं होता है। तुम इस तरह क्यों करते हो? तुम अद्वैत आचार्य की गोपनीयता को क्यों भंग करते हो तथा उनके धार्मिक सिद्धान्तों को क्षति पहुँचाते हो?**

तात्पर्य

कमलाकान्त विश्वास ने अज्ञानवश जगन्नाथ पुरी के राजा महाराज प्रतापरुद्र से अद्वैत आचार्य के तीन सौ रुपयों का ऋण समाप्त करने की याचना की थी, किन्तु साथ ही यह भी स्थापित किया था कि अद्वैत आचार्य पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के अवतार हैं। यह विरोधात्मक है। भगवान् के अवतार इस भौतिक

जगत् के किसी भी व्यक्ति के ऋणी नहीं हो सकते। चैतन्य महाप्रभु इस प्रकार के विरोधाभास से कभी भी प्रसन्न नहीं होते, जिसे पारिभाषिक रूप से *रसाभास* अथवा एक रस के ऊपर दूसरे रस का अतिक्रमण कहते हैं। यह उसी प्रकार का विरोधाभास है, जिस प्रकार कि नारायण का दरिद्र होना ( *दरिद्रनारायण*)।

**प्रतिग्रह कभु ना करिबे राज-धन ।**
**विषयीर अन्न खाइले दुष्ट हय मन ॥५०॥**

**प्रतिग्रह कभु ना करिबे राज-धन ।**
**विषयीर अन्न खाइले दुष्ट हय मन ॥५०॥**

**प्रतिग्रह**—भिक्षा स्वीकार करना; **कभु**—किसी समय भी; **ना**—नहीं; **करिबे**—करना चाहिए; **राज-धन**—राजा द्वारा दान; **विषयीर**—भौतिक लोगों का; **अन्न**—अन्न, भोजन; **खाइले**—खाने से; **दुष्ट**—बिगड़ जाना; **हय**—हो जाता है; **मन**—मन।

### अनुवाद

**"मेरे गुरु अद्वैत आचार्य को धनी पुरुषों या राजाओं से दान कभी भी स्वीकार नहीं करना चाहिए, क्योंकि यदि कोई गुरु ऐसे भौतिकतावादियों का धन या अन्न स्वीकार करता है, तो उसका मन दूषित हो जाता है।**

### तात्पर्य

भौतिकतावादी व्यक्तियों से धन या भोज्य पदार्थ स्वीकार करना अत्यन्त खतरनाक होता है, क्योंकि ऐसा करने से दान लेने वाले का मन दूषित हो जाता है। वैदिक प्रथा के अनुसार दान संन्यासियों तथा ब्राह्मणों को देना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से पाप से मुक्ति होती है। इसीलिए पुराने जमाने में ब्राह्मण ऐसे किसी व्यक्ति से दान नहीं लेते थे, जो अत्यन्त पवित्र न हो। चैतन्य महाप्रभु ने सभी आध्यात्मिक गुरुओं के लिए यह आदेश दिया है। ऐसे भौतिकतावादी व्यक्ति जो अवैध सम्बन्ध, नशा, जुआ तथा मांसाहार जैसे पापमय कार्य त्यागना नहीं चाहते, कभी-कभी हमारे शिष्य बनना चाहते हैं, किन्तु वैष्णव उन पेशेवर गुरुओं की तरह नहीं होते जो अवैध शिष्यों की अवस्था पर ध्यान दिये बिना ही शिष्य स्वीकार करते हैं। शिष्य बनने से पहले विधि-विधानों का पालन करने का संकल्प लेना चाहिए। तब ही एक वैष्णव आचार्य किसी को अपना शिष्य

स्वीकार करता है। वस्तुत: वैष्णवों को ऐसे व्यक्तियों से दान या अन्न तक ग्रहण नहीं करना चाहिए, जो वैष्णव-नियमों का पालन नहीं करते।

**मन दुष्ट हइले नहे कृष्णेर स्मरण ।**
**कृष्ण-स्मृति विनु हय निष्फल जीवन ॥ ५१ ॥**

**मन दुष्ट हइले नहे कृष्णेर स्मरण ।**
**कृष्ण-स्मृति विनु हय निष्फल जीवन ॥५१॥**

**मन**—मन; **दुष्ट**—दूषित होना; **हइले**—होने पर; **नहे**—सम्भव नहीं है; **कृष्णेर**—भगवान् कृष्ण का; **स्मरण**—स्मरण; **कृष्ण-स्मृति**—कृष्ण के स्मरण; **विनु**—बिना; **हय**—होता है; **निष्फल**—निष्फल; **जीवन**—जीवन।

### अनुवाद

**"जब मनुष्य का मन दूषित हो जाता है, तो कृष्ण का स्मरण करना अत्यन्त कठिन हो जाता है और जब कृष्ण के स्मरण में बाधा आती है, तो जीवन निष्फल हो जाता है।**

### तात्पर्य

भक्त को सदैव सतर्क रहना चाहिए कि मन निर्मल रहे, जिससे वह सदैव भगवान् श्रीकृष्ण का स्मरण कर सके। शास्त्रों का कथन है—*स्मर्तव्य: सततं विष्णु:*—भक्त होने पर मनुष्य को सदैव भगवान् विष्णु का स्मरण करना चाहिए। श्रील शुकदेव गोस्वामी ने भी महाराज परीक्षित को यही उपदेश दिया था—*स्मर्तव्यो नित्यश: । श्रीमद्भागवत* (२.१.५) में शुकदेव गोस्वामी ने महाराज परीक्षित को सलाह दी :

*तस्माद् भारत सर्वात्मा भगवान् ईश्वरो हरि: ।*
*श्रोतव्य: कीर्तितव्यश्च स्मर्तव्यश्चेच्छताभयम् ॥*

"हे राजा भरत के वंशज, जो व्यक्ति सारे कष्टों से छूटना चाहता है, उसे चाहिए कि भगवान् का श्रवण करे, उनकी महिमा का गान करे और उनका स्मरण भी करे, क्योंकि वे परमात्मा हैं, नियन्ता हैं और सारे कष्टों से बचाने वाले हैं।" यह वैष्णव के सारे कार्यों का सारांश है और यही उपदेश यहाँ भी दोहराया

गया है। ( *कृष्णस्मृति विनु हय निष्फल जीवन*)। श्रील रूप गोस्वामी ने अपने *भक्तिरसामृतसिन्धु* में कहा है—*अव्यर्थ कालत्वम्*—वैष्णव को अपने बहुमूल्य जीवन का एक क्षण भी व्यर्थ नहीं गँवाने देने के लिए अत्यन्त सतर्क रहना चाहिए। यह वैष्णव का लक्षण है। किन्तु इन्द्रियतृप्ति में ही रुचि रखने वाले धनी या विषयी भौतिकतावादी व्यक्ति की संगति से मनुष्य का मन दूषित हो जाता है और कृष्ण के सतत स्मरण में बाधा पहुँचती है। इसीलिए श्री चैतन्य महाप्रभु ने सलाह दी है—*असत्सङ्गत्याग—एइ वैष्णव-आचार*—वैष्णव को ऐसा आचरण करना चाहिए कि कभी भी अभक्तों या भौतिकतावादियों की संगति न हो। ( *श्रीचैतन्य-चरितामृत, मध्य* २२.८७) ऐसी संगति से बचने का उपाय यह है कि अपने मन में निरन्तर कृष्ण का स्मरण किया जाए।

लोक-लज्जा हय, धर्म-कीर्ति हय हानि ।
ऐछे कर्म ना करिह कभु इहा जानि' ॥५२॥

**लोक-लज्जा हय, धर्म-कीर्ति हय हानि ।**
**ऐछे कर्म ना करिह कभु इहा जानि' ॥५२॥**

**लोक-लज्जा**—अलोकप्रिय; **हय**—हो जाता है; **धर्म**—धर्म; **कीर्ति**—यश; **हय**—हो जाती है; **हानि**—हानि; **ऐछे**—ऐसे; **कर्म**—कर्म; **ना**—नहीं; **करिह**—करना; **कभु**—कभी नहीं; **इहा**—यह; **जानि'**—जानो।

अनुवाद

**"इस तरह मनुष्य जनसाधारण की दृष्टि में अलोकप्रिय हो जाता है, क्योंकि इससे उसकी धार्मिकता तथा यश को हानि पहुँचती है। एक वैष्णव को, विशेषकर जो गुरु का कार्य करता हो, कोई ऐसा कर्म नहीं करना चाहिए। उसे इस तथ्य के प्रति सदैव जागरूक रहना चाहिए।"**

এই শিক্ষা সবাকারে, সবে মনে কৈল ।
আচার্য-গোসাঞি মনে আনন্দ পাইল ॥৫৩॥

**এই শিক্ষা সবাকারে, সবে মনে কৈল ।**
**আচার্য্য-গোসাঞি মনে আনন্দ পাইল ॥৫৩॥**

**एइ**—यह; **शिक्षा**—शिक्षा; **सबाकारे**—सबके लिए; **सबे**—सभी उपस्थित भक्त; **मने**—मन में; **कैल**—इसे लिया; **आचार्य्र-गोसाञि**—अद्वैत आचार्य; **मने**—मन में; **आनन्द**—आनन्द; **पाइल**—पाया।

अनुवाद

**जब चैतन्य महाप्रभु ने कमलाकान्त को यह शिक्षा दी, तो वहाँ पर उपस्थित सारे लोगों ने यही माना कि यह हर एक के लिए है। इस प्रकार अद्वैत आचार्य अत्यधिक प्रसन्न हुए।**

आचार्यर अभिप्राय प्रभु-मात्र बूझे ।
प्रभुर गम्भीर वाक्य आचार्य समूझे ॥५४॥

**आचार्य्रेर अभिप्राय प्रभु-मात्र बुझे ।**
**प्रभुर गम्भीर वाक्य आचार्य्र समुझे ॥५४॥**

**आचार्य्रेर**—अद्वैत आचार्य का; **अभिप्राय**—अभिप्राय; **प्रभु-मात्र**—मात्र चैतन्य महाप्रभु; **बुझे**—समझ सकते हैं; **प्रभुर**—चैतन्य महाप्रभु का; **गम्भीर**—गम्भीर; **वाक्य**—उपदेश; **आचार्य्र**—अद्वैत आचार्य; **समुझे**—समझ सकते हैं।

अनुवाद

**केवल चैतन्य महाप्रभु ही अद्वैत आचार्य के मनोभाव समझ सके और अद्वैत आचार्य महाप्रभु के गम्भीर उपदेश को समझ सके।**

एइ त' प्रस्तावे आछे बहुत विचार ।
ग्रन्थ-बाहुल्य-भये नारि लिखिवार ॥५५॥

**एइ त' प्रस्तावे आछे बहुत विचार ।**
**ग्रन्थ-बाहुल्य-भये नारि लिखिबार ॥५५॥**

**एइ त'**—इस; **प्रस्तावे**—कथन में; **आछे**—हैं; **बहुत**—बहुत; **विचार**—विचार; **ग्रन्थ**—पुस्तक के; **बाहुल्य**—विस्तार के; **भये**—डर से; **नारि**—मैं नहीं; **लिखिबार**—लिखता।

अनुवाद

**इस कथन में अनेक गुह्य विचार हैं। मैं उन सबको नहीं लिख रहा, क्योंकि इससे पुस्तक के व्यर्थ ही बढ़ जाने का भय है।**

শ্রী-যদুনন্দনাচার্য—অদ্বৈতের শাখা ।
তাঁর শাখা-উপশাখার নাহি হয় লেখা ॥৫৬॥

**श्री-यदुनन्दनाचार्य—अद्वैतेर शाखा ।**
**ताँर शाखा-उपशाखार नाहि हय लेखा ॥५६॥**

**श्री-यदुनन्दन-आचार्य**—श्री यदुनन्दन आचार्य; **अद्वैतेर**—अद्वैत आचार्य की; **शाखा**—शाखा; **ताँर**—उनकी; **शाखा**—शाखाएँ; **उपशाखार**—उपशाखाएँ; **नाहि**—नहीं; **हय**—है; **लेखा**—वर्णन।

अनुवाद

**अद्वैत आचार्य की पाँचवीं शाखा श्री यदुनन्दन आचार्य थे, जिनसे इतनी शाखाएँ तथा उपशाखाएँ निकलीं कि उन सबको लिपिबद्ध करना असम्भव है।**

तात्पर्य

रघुनाथ दास गोस्वामी के प्राधिकृत दीक्षा-गुरु यदुनन्दन आचार्य थे। दूसरे शब्दों में, जब रघुनाथ दास गोस्वामी गृहस्थ थे, तब यदुनन्दन आचार्य ने उन्हें घर ही में दीक्षा दी थी। बाद में रघुनाथ दास गोस्वामी ने जगन्नाथ पुरी में श्री चैतन्य महाप्रभु की शरण ग्रहण की।

বাসুদেব দত্তের তেঁহো কৃপার ভাজন ।
সর্ব-ভাবে আশ্রিয়াছে চৈতন্য-চরণ ॥৫৭॥

**वासुदेव दत्तेर तेंहो कृपार भाजन ।**
**सर्व-भावे आश्रियाछे चैतन्य-चरण ॥५७॥**

**वासुदेव दत्तेर**—वासुदेव दत्त का; **तेंहो**—वे थे; **कृपार**—कृपा के; **भाजन**—पात्र; **सर्व-भावे**—सभी प्रकार से; **आश्रियाछे**—शरण ली; **चैतन्य-चरण**—चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों की।

अनुवाद

**श्री यदुनन्दन आचार्य वासुदेव दत्त के शिष्य थे और उन्हें गुरु की पूरी कृपा प्राप्त थी। अतएव उन्होंने सभी प्रकार से श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणों को परम आश्रय के रूप में स्वीकार किया।**

### तात्पर्य

*गौरगणोद्देश-दीपिका* के १४०वें श्लोक में बतलाया गया है कि वासुदेव दत्त पहले वृन्दावन के गायक मधुव्रत थे।

ভাগবতাচার্য, আর বিষ্ণুদাসাচার্য ।
চক্রপাণি আচার্য, আর অনন্ত আচার্য ॥৫৮॥

**भागवताचार्य, आर विष्णुदासाचार्य ।**
**चक्रपाणि आचार्य, आर अनन्त आचार्य ॥५८॥**

**भागवत-आचार्य**—भागवत आचार्य; **आर**—और; **विष्णुदास-आचार्य**—विष्णुदास आचार्य; **चक्रपाणि आचार्य**—चक्रपाणी आचार्य; **आर**—और; **अनन्त आचार्य**—अनन्त आचार्य।

### अनुवाद

**भागवत आचार्य, विष्णुदास आचार्य, चक्रपाणि आचार्य तथा अनन्त अद्वैत आचार्य की क्रमशः छठी, सातवीं, आठवीं तथा नवीं शाखाएँ थे।**

### तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी प्रभुपाद अपने *अनुभाष्य* में कहते हैं कि भागवत आचार्य पहले अद्वैत आचार्य के अनुयायी थे, किन्तु बाद में वे गदाधर पण्डित के अनुयायियों में गिने जाने लगे। यदुनन्दन दास द्वारा लिखित *शाखानिर्णयामृत* के छठे श्लोक में कहा गया है कि भागवत आचार्य ने *प्रेमतरंगिणी* नामक सुप्रसिद्ध ग्रंथ की रचना की। *गौरगणोद्देश-दीपिका* के श्लोक १९५ के अनुसार भागवत आचार्य पहले वृन्दावन में श्वेतमंजरी के रूप में रहते थे। विष्णुदास आचार्य खेतरि-महोत्सव के समय उपस्थित थे। वे अच्युतानन्द के साथ वहाँ गये थे, ऐसा *भक्ति रत्नाकर* के दशम तरंग में बतलाया गया है। अनन्त आचार्य आठ प्रमुख गोपियों में से एक थे। उनका पहले का नाम सुदेवी था। यद्यपि वे अद्वैत आचार्य के अनुयायियों में से थे, किन्तु बाद में वे गदाधर गोस्वामी के एक प्रमुख भक्त बन गये।

নন্দিনী, আর কামদেব, চৈতন্য-দাস ।
দুর্লভ বিশ্বাস, আর বনমালি-দাস ॥৫৯॥

**नन्दिनी, आर कामदेव, चैतन्य-दास ।**
**दुर्लभ विश्वास, आर वनमालि-दास ॥ ५९ ॥**

**नन्दिनी**—नन्दिनी; **आर**—और; **कामदेव**—कामदेव; **चैतन्य-दास**—चैतन्य दास; **दुर्लभ विश्वास**—दुर्लभ विश्वास; **आर**—और; **वनमालि-दास**—वनमाली दास।

अनुवाद

**नन्दिनी, कामदेव, चैतन्य दास, दुर्लभ विश्वास तथा वनमाली दास श्री अद्वैत आचार्य की क्रमशः दसवीं, ग्यारहवीं, बारहवीं, तेरहवीं तथा चौदहवीं शाखाएँ थे।**

জগন্নাথ কর, আর কর ভবনাথ ।
হৃদয়ানন্দ সেন, আর দাস ভোলানাথ ॥ ৬০ ॥

**जगन्नाथ कर, आर कर भवनाथ ।**
**हृदयानन्द सेन, आर दास भोलानाथ ॥ ६० ॥**

**जगन्नाथ कर**—जगन्नाथ कर; **आर**—और; **कर भवनाथ**—भवनाथ कर; **हृदयानन्द सेन**—हृदयानन्द सेन; **आर**—और; **दास भोलानाथ**—भोलानाथ दास।

अनुवाद

**इसी तरह जगन्नाथ कर, भवनाथ कर, हृदयानन्द सेन तथा भोलानाथ दास अद्वैत आचार्य की क्रमशः पंद्रहवीं, सोलहवीं, सत्रहवीं तथा अठारहवीं शाखाएँ थे।**

যাদব-দাস, বিজয়-দাস, দাস জনার্দন ।
অনন্ত-দাস, কানু-পণ্ডিত, দাস নারায়ণ ॥ ৬১ ॥

**য়াদব-দাস, বিজয়-দাস, দাস জনার্দন ।**
**অনন্ত-দাস, কানু-পণ্ডিত, দাস নারায়ণ ॥ ৬১ ॥**

**য়াদব-দাস**—यादव दास; **বিজয়-দাস**—विजय दास; **দাস জনার্দন**—जनार्दन दास; **অনন্ত-দাস**—अनन्त दास; **কানু-পণ্ডিত**—कानु पण्डित; **দাস নারায়ণ**—नारायण दास।

अनुवाद

**यादव दास, विजय दास, जनार्दन दास, अनन्त दास, कानु पण्डित**

**तथा नारायण दास क्रमशः उन्नीसवीं, बीसवीं, इक्कीसवीं, बाइसवीं, तेइसवीं और चौबीसवीं शाखाएँ थे।**

श्रीवज्र पण्डित, ब्रह्मचारी हरिदास ।
पुरुषोत्तम ब्रह्मचारी, आर कृष्णदास ॥ ६२॥

**श्रीवत्स पण्डित, ब्रह्मचारी हरिदास ।**
**पुरुषोत्तम ब्रह्मचारी, आर कृष्णदास ॥ ६२॥**

**श्रीवत्स पण्डित**—श्रीवत्स पण्डित; **ब्रह्मचारी हरिदास**—हरिदास ब्रह्मचारी; **पुरुषोत्तम ब्रह्मचारी**—पुरुषोत्तम ब्रह्मचारी; **आर**—और; **कृष्णदास**—कृष्णदास।

अनुवाद

**श्रीवत्स पण्डित, हरिदास ब्रह्मचारी, पुरुषोत्तम ब्रह्मचारी तथा कृष्णदास अद्वैत आचार्य की क्रमशः पच्चीसवीं, छब्बीसवीं, सत्ताइसवीं तथा अट्ठाइसवीं शाखाएँ थे।**

पुरुषोत्तम पण्डित, आर रघुनाथ ।
वनमाली कविचन्द्र, आर वैद्यनाथ ॥ ६३॥

**पुरुषोत्तम पण्डित, आर रघुनाथ ।**
**वनमाली कविचन्द्र, आर वैद्यनाथ ॥ ६३॥**

**पुरुषोत्तम पण्डित**—पुरुषोत्तम पण्डित; **आर रघुनाथ**—और रघुनाथ; **वनमाली कविचन्द्र**—वनमाली कविचन्द्र; **आर**—और; **वैद्यनाथ**—वैद्यनाथ।

अनुवाद

**उसके आगे क्रमशः पुरुषोत्तम पण्डित, रघुनाथ, वनमाली कविचन्द्र तथा वैद्यनाथ अद्वैत आचार्य की उन्तीसवीं, तीसवीं, इकतीसवीं और बत्तीसवीं शाखाएँ थे।**

लोकनाथ पण्डित, आर मुरारि पण्डित ।
श्री-हरिचरण, आर माधव पण्डित ॥ ६४॥

**लोकनाथ पण्डित, आर मुरारि पण्डित ।**
**श्री-हरिचरण, आर माधव पण्डित ॥ ६४॥**

**लोकनाथ पण्डित**—लोकनाथ पण्डित; **आर**—और; **मुरारि पण्डित**—मुरारी पण्डित; **श्री-हरिचरण**—श्री हरिचरण; **आर**—और; **माधव पण्डित**—माधव पण्डित।

अनुवाद

**लोकनाथ पण्डित, मुरारी पण्डित, श्री हरिचरण तथा माधव पण्डित अद्वैत आचार्य की क्रमशः तैंतीसवीं चौंतीसवीं, पैंतीसवीं और छत्तीसवीं शाखाएँ थे।**

विजय पण्डित, आर पण्डित श्रीराम ।
असङ्ख्य अद्वैत-शाखा कत लइब नाम ॥ ६५॥
**विजय पण्डित, आर पण्डित श्रीराम ।**
**असङ्ख्य अद्वैत-शाखा कत लइब नाम ॥ ६५॥**

**विजय-पण्डित**—विजय पण्डित; **आर**—और; **पण्डित श्रीराम**—श्रीराम पण्डित; **असङ्ख्य**—असंख्य; **अद्वैत-शाखा**—अद्वैत आचार्य की शाखाएँ; **कत**—कितनी; **लइब**—मैं गिनूँ; **नाम**—उनके नाम।

अनुवाद

**विजय पण्डित तथा श्रीराम पण्डित अद्वैत आचार्य की दो महत्त्वपूर्ण शाखाएँ थे। शाखाएँ तो असंख्य हैं, लेकिन मैं उन सबका नाम गिना पाने में असमर्थ हूँ।**

तात्पर्य

चूँकि श्रीवास पण्डित नारद मुनि के अवतार थे, अतएव उनके छोटे भाई श्रीराम पण्डित को नारद मुनि के घनिष्ठतम मित्र पर्वत मुनि का अवतार माना जाता है।

मालि-दत्त जल अद्वैत-स्कन्ध योगाय ।
सेइ जले जीये शाखा,—फुल-फल पाय ॥ ६६॥
**मालि-दत्त जल अद्वैत-स्कन्ध योगाय ।**
**सेइ जले जीये शाखा,—फुल-फल पाय ॥ ६६॥**

**मालि-दत्त**—माली द्वारा दिया हुआ; **जल**—जल; **अद्वैत-स्कन्ध**—अद्वैत आचार्य नामक

शाखा; **ग्रोगाय**—देती है; **सेइ**—उस; **जले**—जल; **जीये**—जीता है; **शाखा**—शाखाएँ; **फुल-फल**—फल और फूल; **पाय**—बढ़ती हैं।

अनुवाद

**अद्वैत आचार्य की शाखा को मूल माली श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा प्रदत्त जल प्राप्त हुआ। इस तरह उपशाखाओं का प्रतिपालन हुआ और उनमें प्रचुर फल-फूल लगे।**

तात्पर्य

अद्वैत आचार्य की वे शाखाएँ, जो श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा प्रदत्त जल से फली-फूलीं, उन्हें ही प्रामाणिक आचार्य मानना चाहिए। जैसाकि इसके पूर्व बतलाया जा चुका है, अद्वैत आचार्य के प्रतिनिधि बाद में दो समूहों में बँट गये—आचार्य की गुरु-शिष्य परम्परा की प्रामाणिक शाखाएँ तथा अद्वैत आचार्य की बनावटी शाखाएँ। जिन्होंने चैतन्य महाप्रभु के सिद्धान्तों का पालन किया वे तो फली-फूलीं, किन्तु अन्य शाखाएँ सूख गईं, जिनका वर्णन अगले श्लोक में हुआ है।

**इहार मध्ये माली पाछे कोन शाखा-गण ।**
**ना माने चैतन्य-माली दुर्दैव कारण ॥६७॥**

**इहार मध्ये माली पाछे कोन शाखा-गण ।**
**ना माने चैतन्य-माली दुर्दैव कारण ॥६७॥**

**इहार**—उनका; **मध्ये**—के मध्य; **माली**—माली; **पाछे**—बाद में; **कोन**—कुछ; **शाखा-गण**—शाखाएँ; **ना**—नहीं; **माने**—स्वीकार करतीं; **चैतन्य-माली**—चैतन्य महाप्रभु माली; **दुर्दैव**—दुर्भाग्य; **कारण**—कारण।

अनुवाद

**चैतन्य महाप्रभु के तिरोधान के बाद दुर्भाग्यवश कुछ शाखाएँ महाप्रभु द्वारा दिखाए गये मार्ग से भटक गईं।**

**सृजाइल, जीयाइल, ताँरे ना मानिल ।**
**कृतघ्न हइला, ताँरे स्कन्ध क्रुद्ध हइल ॥६८॥**

**सृजाइल, जीयाइल, ताँरे ना मानिल ।**
**कृतघ्न हइला, ताँरे स्कन्ध क्रुद्ध हइल ॥ ६८ ॥**

**सृजाइल**—फलीभूत हुआ; **जीयाइल**—पोषण किया; **ताँरे**—उनको; **ना**—नहीं; **मानिल**—स्वीकार किया; **कृतघ्न**—कृतघ्न; **हइला**—इस प्रकार हो गईं; **ताँरे**—उनको; **स्कन्ध**—तना; **क्रुद्ध**—क्रुद्ध; **हइल**—हो गया।

अनुवाद

**कुछ शाखाओं ने उस मूल तने को स्वीकार नहीं किया, जो सम्पूर्ण वृक्ष का जीवनदाता तथा पालनकर्ता था। इस प्रकार जब वे कृतघ्न बन गईं, तो मूल तना उन पर क्रुद्ध हो गया।**

क्रुद्ध हञा स्कन्ध तारे जल ना सञ्चारे ।
जलाभावे कृश शाखा शुकाइया मरे ॥ ६९ ॥
**क्रुद्ध हञा स्कन्ध तारे जल ना सञ्चारे ।**
**जलाभावे कृश शाखा शुकाइया मरे ॥ ६९ ॥**

**क्रुद्ध हञा**—क्रुद्ध होकर; **स्कन्ध**—तना; **तारे**—उनको; **जल**—जल; **ना**—नहीं; **सञ्चारे**—छिड़का; **जल-अभावे**—जल के अभाव में; **कृश**—पतली; **शाखा**—शाखा; **शुकाइया**—सूखकर; **मरे**—मर गई।

अनुवाद

**इस प्रकार चैतन्य महाप्रभु ने उन पर अपनी कृपा-रूपी जल नहीं छिड़का और धीरे-धीरे वे मुरझाकर मर गईं।**

चैतन्य-रहित देह—शुष्ककाष्ठ-सम ।
जीवितेइ मृत सेइ, मैले दण्डे यम ॥ ७० ॥
**चैतन्य-रहित देह—शुष्ककाष्ठ-सम ।**
**जीवितेइ मृत सेइ, मैले दण्डे यम ॥ ७० ॥**

**चैतन्य-रहित**—चेतना के बिना; **देह**—शरीर; **शुष्क-काष्ठ-सम**—ठीक सूखी लकड़ी के समान; **जीवितेइ**—जीते हुए भी; **मृत**—मृत; **सेइ**—वह; **मैले**—मृत्यु के बाद; **दण्डे**—दण्ड देते हैं; **यम**—यमराज।

अनुवाद

**कृष्णभावनाविहीन पुरुष शुष्क काठ या मृत शरीर से बढ़कर कुछ नहीं है। वह जीवित होकर भी मृत माना जाता है और मरने के बाद उसे यमराज दण्डित करते हैं।**

तात्पर्य

*श्रीमद्भागवत* के छठे स्कन्ध, तृतीय अध्याय, उनतीसवें श्लोक के अनुसार मृत्यु के अधीक्षक यमराज अपने सहायकों को बतलाते हैं कि वे किस तरह के लोगों को पकड़कर उनके पास लायें। वे कहते हैं, "ऐसा व्यक्ति जिसकी जिह्वा पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के गुणों और पवित्र नाम का कभी वर्णन नहीं करती, जिसका हृदय कृष्ण तथा उनके चरणकमलों का स्मरण करके पुलकित नहीं होता, तथा जिसका सिर कभी भगवान् को नमस्कार करने के लिए नहीं झुकता, उसे दण्ड के लिए मेरे पास अवश्य लाना चाहिए।" दूसरे शब्दों में, अभक्तों को दण्ड के लिए यमराज के पास ले जाये जाते हैं और तब भौतिक प्रकृति उन्हें तरह-तरह के शरीर प्रदान करती है। मृत्यु के बाद, अर्थात् देहान्तर होने पर अभक्तों को न्याय के लिए यमराज के पास ले जाया जाता है। यमराज के निर्णय से पूर्वजन्म के कर्मों के अनुसार प्रकृति उन्हें शरीर प्रदान करती है। यह देहान्तर की विधि है अर्थात् आत्मा का एक शरीर से दूसरे में स्थानान्तरण है। तथापि कृष्णभावनामय भक्तगण यमराज के निर्णय के पात्र नहीं होते। भक्तों के लिए मार्ग खुला रहता है, जिसकी पुष्टि *भगवद्गीता* में की गई है। शरीर त्यागने के बाद (*त्यक्त्वादेहम्*) भक्त को दूसरा भौतिक शरीर धारण नहीं करना पड़ता, क्योंकि वह आध्यात्मिक शरीर पाकर भगवद्धाम वापस जाता है। यमराज का दण्ड तो उनके निमित्त है, जो कृष्णभावनाभावित नहीं हैं।

**केवल ए गण-प्रति नहे एई दण्ड ।**
**चैतन्य-विमुख येई सेई त' पाषण्ड ॥७१॥**

**केवल ए गण-प्रति नहे एइ दण्ड ।**
**चैतन्य-विमुख येइ सेइ त' पाषण्ड ॥७१॥**

**केवल**—केवल; **ए**—यह; **गण**—समूह; **प्रति**—उनको; **नहे**—नहीं है; **एइ**—यह;

**दण्ड**—दण्ड; **चैतन्य-विमुख**—श्री चैतन्य महाप्रभु के विमुख; **ग्रेइ**—कोई भी; **सेइ**—वह; **त'**—किन्तु; **पाषण्ड**—नास्तिक।

अनुवाद

**न केवल अद्वैत आचार्य के दिग्भ्रमित वंशज, अपितु जो कोई भी श्री चैतन्य महाप्रभु सम्प्रदाय के विरुद्ध है, उसे नास्तिक मानना चाहिए और वह यमराज के दण्ड का पात्र है।**

কি পণ্ডিত, কি তপস্বী, কিবা গৃহী, যতি ।
চৈতন্য-বিমুখ যেই, তার এই গতি ॥৭২॥

**कि पण्डित, कि तपस्वी, किबा गृही, ग्रति ।**
**चैतन्य-विमुख ग्रेइ, तार एइ गति ॥ ७२ ॥**

**कि पण्डित**—क्या कोई विद्वान पण्डित; **कि तपस्वी**—क्या कोई महान् साधु; **किबा**—अथवा; **गृही**—गृहस्थी; **ग्रति**—या संन्यासी; **चैतन्य-विमुख**—श्री चैतन्य महाप्रभु के सम्प्रदाय के विरुद्ध; **ग्रेइ**—कोई भी; **तार**—उसका; **एइ**—यह; **गति**—गन्तव्य।

अनुवाद

**चाहे कोई पण्डित हो, महान् तपस्वी हो अथवा सफल गृहस्थ हो या प्रसिद्ध संन्यासी ही क्यों न हो, किन्तु यदि वह चैतन्य महाप्रभु के सम्प्रदाय के विरुद्ध है, तो उसे यमराज द्वारा दिये जाने वाला कष्ट भोगना ही होगा।**

যে যে লৈল শ্রী-অচ্যুতানন্দের মত ।
সেই আচার্যের গণ——মহা-ভাগবত ॥৭৩॥

**ग्रे ग्रे लैल श्री-अच्युतानन्देर मत ।**
**सेइ आचार्य्येर गण——महा-भागवत ॥ ७३ ॥**

**ग्रे ग्रे**—जो कोई; **लैल**—स्वीकार किया; **श्री-अच्युतानन्देर**—श्री अच्युतानन्द का; **मत**—मार्ग; **सेइ**—वे; **आचार्य्येर गण**—अद्वैत आचार्य के वंशज; **महा-भागवत**—सभी महान् भक्त हैं।

अनुवाद

**अद्वैत आचार्य के जिन वंशजों ने श्री अच्युतानन्द के मार्ग को अपनाया, वे सबके सब महान् भक्त हुए।**

**तात्पर्य**

इस सन्दर्भ में श्रील भक्तिविनाद ठाकुर ने अपने *अमृत-प्रवाह-भाष्य* में एक संक्षिप्त टिप्पणी दी है, जो इस प्रकार है, "श्री अद्वैत आचार्य *भक्तिकल्पतरु* के प्रधान तनों में से एक हैं। श्री चैतन्य महाप्रभु-रूपी माली ने भक्ति के वृक्ष की जड़ों में जल सींचा और इस प्रकार इसके तने तथा शाखाओं का परिपोषण किया। फिर भी जीव ने माया रूपी सबसे दुर्भाग्यपूर्ण अवस्था के वशीभूत होकर कुछ शाखाओं में माली द्वारा डाले गये जल को स्वीकार न करने के कारण तने को ही महान् भक्तिकल्पतरु का कारण मान लिया। दूसरे शब्दों में अद्वैत आचार्य की शाखाएँ या वंशज जिन्होंने अद्वैत आचार्य को ही भक्तिलता का आदि कारण माना तथा जिन्होंने इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु के आदेशों की अवमानना की या उनका उल्लंघन किया, वे सींचे गये जल के प्रभाव से वंचित रह गये और सूखकर नष्ट हो गये। यही नहीं, यह भी जान लेना चाहिए कि न केवल अद्वैत आचार्य के दिग्भ्रमित वंशज, अपितु जो कोई भी चैतन्य महाप्रभु से सम्बन्ध नहीं रखता, वह चाहे स्वतन्त्र रूप से महान् संन्यासी, विद्वान या तपस्वी ही क्यों न हो, वृक्ष की मृत शाखा के तुल्य है।"

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर द्वारा दिया गया यह विश्लेषण श्री कृष्णदास कविराज गोस्वामी के कथनों के अनुरूप है। यह वर्तमान तथाकथित हिन्दू धर्म की स्थिति का चित्रण प्रस्तुत करता है, जो प्रधानत: मायावादी दर्शन से संचालित होने के कारण विभिन्न कपोलकल्पित विचारधाराओं की खिचड़ी बन चुका है। मायावादी लोग कृष्णभावनामृत आन्दोलन से अत्यधिक डरते हैं और आरोप लगाते हैं कि यह हिन्दू धर्म को बिगाड़ रहा है, क्योंकि यह विश्व के सभी भागों के लोगों को तथा सभी धार्मिक सम्प्रदायों के लोगों को स्वीकार करता है और उन्हें वैज्ञानिक रीति से *दैव-वर्णाश्रम-धर्म* में लगाता है। किन्तु जैसाकि हम अनेक बार बतला चुके हैं, हमें वैदिक साहित्य में "हिन्दू" जैसा कोई शब्द प्राप्त नहीं होता। यह शब्द सम्भवतया अफगानिस्तान से आया जो मुख्यतया मुस्लिम देश है, और सबसे पहले हिन्दूकुश दर्रे के लिए प्रयुक्त हुआ, जो आज भी भारत तथा विभिन्न मुस्लिम देशों के बीच व्यापारिक मार्ग का अंग बना हुआ है।

धर्म की वास्तविक वैदिक प्रणाली *वर्णाश्रम धर्म* कहलाती है, जिसकी पुष्टि *विष्णु पुराण* (३.८.९) में इस प्रकार हुई है :

*वर्णाश्रमाचारवता पुरुषेण परः पुमान्।*
*विष्णुराराध्यते पन्था नान्यत् तत्तोषकारणम्॥*

वैदिक साहित्य वर्णाश्रम धर्म के सिद्धान्तों का पालन करने का सुझाव देता है। वर्णाश्रम धर्म की विधि को अपनाने से मनुष्य जीवन सफल बनेगा, क्योंकि यह उसे पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् से जोड़ेगा, जो मानव जीवन के लक्ष्य हैं। अतः कृष्णभावनामृत आन्दोलन सारी मानवता के निमित्त है। यद्यपि मानव समाज में विभिन्न विभाग या उपविभाग हैं, किन्तु सारे मनुष्य एक ही योनि से सम्बन्धित हैं। इसलिए हम मानते हैं कि उन सबमें पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् विष्णु से जुड़ने की अपनी वैधानिक स्थिति को समझने का सामर्थ्य है। श्री चैतन्य महाप्रभु पुष्टि करते हैं—*जीवेर 'स्वरूप' हय—कृष्णेर नित्यदास*—"हर जीव पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् का सनातन अंश है, नित्य दास है।" मानव रूप धारण करने वाला हर जीव अपनी स्थिति की महत्ता को समझ सकता है और इस तरह वह कृष्ण-भक्त होने का पात्र है। अतएव हम यह मानकर चलते हैं कि सारी मानवता को कृष्णभावनामृत की शिक्षा मिलनी चाहिए। निस्सन्देह, संसार के सभी भागों में और हर देश में जहाँ भी हम संकीर्तन आन्दोलन का प्रचार करते हैं, वहाँ हम देखते हैं कि लोग बिना हिचक हरे कृष्ण महामन्त्र को सरलता से स्वीकार कर लेते हैं। इस कीर्तन का प्रभाव यह दिखता है कि हरे कृष्ण आन्दोलन के सारे सदस्य, चाहे उनकी पृष्ठभूमि कैसी ही क्यों न रही हो, पापमय जीवन के चारों सिद्धान्तों का परित्याग कर देते हैं और भक्ति के उच्च पद को प्राप्त करते हैं।

अपने आपको पण्डित, संन्यासी, गृहस्थ तथा स्वामी बतलाने वाले हिन्दू धर्म के तथाकथित अनुयायी वैदिक धर्म की असार शुष्क शाखाएँ हैं। वे नपुंसक हैं; वे मावन समाज के लाभार्थ वैदिक संस्कृति को फैलाने में कुछ भी नहीं कर सकते। वैदिक संस्कृति का सार तो श्री चैतन्य महाप्रभु का सन्देश है। उनका आदेश है :

*यारे देख, तारे कह 'कृष्ण' उपदेश।*
*आमार आज्ञाय गुरु हञा तार एइ देश॥*

*(चैतन्य चरितामृत,* मध्य ७.१२८)

जो भी व्यक्ति मिले उसे सहज भाव से कृष्णकथा के सिद्धान्तों का उपदेश देना चाहिए, जो *भगवद्गीता यथारूप* तथा *श्रीमद्भागवत* में वर्णित हैं। जो व्यक्ति कृष्णकथा या श्री चैतन्य महाप्रभु के सम्प्रदाय में रुचि नहीं रखता, वह शुष्क असार निर्जीव काठ के तुल्य है। इस्कॉन शाखा प्रत्यक्षत: श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा सिंचित होने के कारण निस्सन्देह, सफल बन रही है, जबकि तथाकथित हिन्दू-धर्म की असम्बद्ध शाखाएँ, जो इस्कॉन से द्वेष रखती हैं, सूखकर मृत हो रही हैं।

সেই সেই,—আচার্যের কৃপার ভাজন ।
অনায়াসে পাইল সেই চৈতন্য-চরণ ॥৭৪॥

**সেइ সেइ,—আচার্য্যের কৃপার ভাজন ।**
**অনায়াসে পাইল সেই চৈতন্য-চরণ ॥৭৪॥**

**সেइ সেइ**—जो कोई; **আচার্য্যের**—अद्वैत आचार्य की; **কৃপার**—कृपा का; **ভাজন**—पात्र; **অনায়াসে**—सहज में; **পাইল**—पाया; **সেই**—वह; **চৈতন্য-চরণ**—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमल।

अनुवाद

**अद्वैत आचार्य की कृपा से जिन भक्तों ने चैतन्य महाप्रभु के मार्ग का दृढ़ता से पालन किया, उन्हें चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों का आश्रय सहज ही प्राप्त हो गया।**

অচ্যুতের যেই মত, সেই মত সার ।
আর যত মত সব হৈল ছারখার ॥৭৫॥

**অচ্যুতের যেই মত, সেই মত সার ।**
**আর যত মত সব হৈল ছারখার ॥৭৫॥**

**অচ্যুতের**—अच्युतानन्द का; **যেই**—जो; **মত**—मार्ग; **সেই**—वह; **মত**—मार्ग; **সার**—सार; **আর**—अन्य; **যত**—सभी; **মত**—नहीं; **সব**—सब; **হৈল**—हो गया; **ছারখার**—टूट फूट गया।

अनुवाद

**अतएव यह निष्कर्ष यह निकलता है कि अच्युतानन्द का मार्ग ही आध्यात्मिक जीवन का सार है। जिन लोगों ने इस मार्ग का पालन नहीं किया, वे मात्र तितर-बितर होकर रह गये।**

सेई आचार्य-गणे मोर कोटि नमस्कार ।
अच्युतानन्द-प्राय, चैतन्य——जीवन याँहार ॥७६॥

**सेइ आचार्य्र-गणे मोर कोटि नमस्कार ।**
**अच्युतानन्द-प्राय, चैतन्य——जीवन य्राँहार ॥७६॥**

**सेइ**—वे; **आचार्य्र-गणे**—गुरुओं के; **मोर**—मेरा; **कोटि**—कोटि, करोड़ों; **नमस्कार**—नमस्कार; **अच्युतानन्द-प्राय**—लगभग अच्युतानन्द जैसे; **चैतन्य**—चैतन्य महाप्रभु; **जीवन**—जीवन; **य्राँहार**—जिनका।

अनुवाद

**अतः मैं अच्युतानन्द के उन असली अनुगामियों को कोटि-कोटि नमस्कार करता हूँ, जिनके जीवनाधार श्री चैतन्य महाप्रभु थे।**

एइ त' कहिलाँ आचार्य-गोसाञिर गण ।
तिन स्कन्ध-शाखार कैल सङ्क्षेप गणन ॥७७॥

**एइ त' कहिलाँ आचार्य्र-गोसाञिर गण ।**
**तिन स्कन्ध-शाखार कैल सङ्क्षेप गणन ॥७७॥**

**एइ त'**—इस प्रकार; **कहिलाँ**—मैंने कहा है; **आचार्य्र**—अद्वैत आचार्य; **गोसाञिर**—गुरु के; **गण**—वंशज; **तिन**—तीन; **स्कन्ध**—तने की; **शाखार**—शाखाओं की; **कैल**—की गई; **सङ्क्षेप**—संक्षेप में; **गणन**—गणना।

अनुवाद

**इस तरह मैंने संक्षेप में श्री अद्वैत आचार्य के वंशजों की तीन शाखाओं ( अच्युतानन्द, कृष्ण मिश्र तथा गोपाल ) का वर्णन किया है।**

शाखा-उपशाखा, तार नाहिक गणन ।
किछु-मात्र कहि' करि दिग्दरशन ॥७८॥

**शाखा-उपशाखा, तार नाहिक गणन ।**
**किछु-मात्र कहि' करि दिग्दरशन ॥ ७८ ॥**

**शाखा-उपशाखा**—शाखाएँ तथा उपशाखाएँ; **तार**—उनकी; **नाहिक**—नहीं है; **गणन**—गणना; **किछु-मात्र**—उनके बारे में कुछ; **कहि'**—कहना; **करि**—मैं केवल दे रहा हूँ; **दिग्-दरशन**—उसकी झलक मात्र।

अनुवाद

**अद्वैत आचार्य की असंख्य शाखाएँ तथा उपशाखाएँ हैं। उन सबकी पूर्णरूपेण गणना कर पाना अत्यन्त कठिन है। मैंने तो पूरे तने तथा इसकी शाखाओं-उपशाखाओं की झाँकी मात्र प्रस्तुत की है।**

श्री-गदाधर पण्डित शाखाते महोत्तम ।
ताँर उपशाखा किछु करि ये गणन ॥७९॥

**श्री-गदाधर पण्डित शाखाते महोत्तम ।**
**ताँर उपशाखा किछु करि ये गणन ॥ ७९ ॥**

**श्री-गदाधर पण्डित**—श्री गदाधर पण्डित; **शाखाते**—शाखा के; **महोत्तम**—बहुत बड़े; **ताँर**—उनकी; **उपशाखा**—शाखाएँ तथा उपशाखाएँ; **किछु**—कुछ; **करि**—मुझे करने दो; **ये**—वह; **गणन**—गणना।

अनुवाद

**अद्वैत आचार्य की शाखाओं तथा उपशाखाओं का वर्णन करने के बाद मैं अब श्री गदाधर पण्डित के कुछ वंशजों का वर्णन करने का प्रयास करूँगा, क्योंकि यह प्रधान शाखाओं में से एक है।**

शाखा-श्रेष्ठ ध्रुवानन्द, श्रीधर ब्रह्मचारी ।
भागवताचार्य, हरिदास ब्रह्मचारी ॥८०॥

**शाखा-श्रेष्ठ ध्रुवानन्द, श्रीधर ब्रह्मचारी ।**
**भागवताचार्य, हरिदास ब्रह्मचारी ॥ ८० ॥**

**शाखा-श्रेष्ठ**—प्रमुख शाखा; **ध्रुवानन्द**—ध्रुवानन्द; **श्रीधर ब्रह्मचारी**—श्रीधर ब्रह्मचारी; **भागवताचार्य**—भागवत आचार्य; **हरिदास ब्रह्मचारी**—हरिदास ब्रह्मचारी।

अनुवाद

**श्री गदाधर पण्डित की मुख्य शाखाएँ थीं ( १ ) श्री ध्रुवानन्द, ( २ ) श्रीधर ब्रह्मचारी, ( ३ ) हरिदास ब्रह्मचारी तथा ( ४ ) रघुनाथ भागवताचार्य।**

तात्पर्य

*गौरगणोद्देश-दीपिका* के श्लोक १५२ में ध्रुवानन्द ब्रह्मचारी को पूर्व जन्म की ललिता कहा गया है और श्लोक १९४ तथा १९९ में श्रीधर ब्रह्मचारी को चन्द्रलतिका गोपी कहा गया है।

अनन्त आचार्य, कविदत्त, मिश्र-नयन ।
गङ्गामन्त्री मामु ठाकुर, कण्ठाभरण ॥८१॥

**अनन्त आचार्य**—अनन्त आचार्य; **कवि-दत्त**—कवि दत्त; **मिश्र-नयन**—नयन मिश्र; **गङ्गामन्त्री**—गंगा मंत्री; **मामु ठाकुर**—मामु ठाकुर; **कण्ठाभरण**—कण्ठाभरण।

अनुवाद

**पाँचवीं शाखा थे अनन्त आचार्य, छठी कविदत्त, सातवीं नयन मिश्र, आठवीं गंगामन्त्री, नवीं मामु ठाकुर तथा दसवीं शाखा कण्ठाभरण थे।**

तात्पर्य

*गौरगणोद्देश-दीपिका* में कविदत्त को कलकण्ठी गोपी के रूप में (श्लोक १९७ तथा २०७), नयन मिश्र को नित्यमंजरी गोपी (श्लोक १९६ तथा २०७) और गंगामंत्री को चन्द्रिका गोपी के रूप में (श्लोक १९६ तथा २०५) बतलाया गया है। मामु ठाकुर का असली नाम जगन्नाथ चक्रवर्ती था। वे श्री चैतन्य महाप्रभु के पितामह श्री नीलाम्बर चक्रवर्ती के भांजे थे। बंगाल के *मामा* का रिश्ता पूर्वी बंगाल तथा उड़ीसा में *मामु* हो जाता है। इस तरह जगन्नाथ चक्रवर्ती मामु या मामा ठाकुर कहलाते थे। मामु ठाकुर का निवासस्थान फरीदपुर जिले के मगड़ोबा गाँव में था। श्री गदाधर पण्डित के तिरोभाव के बाद मामु ठाकुर जगन्नाथ पुरी के टोटा गोपीनाथ मन्दिर के महन्त बन गये। कुछ वैष्णवों के

मतानुसार मामु ठाकुर पहले श्री रूपमंजरी के नाम से विख्यात थे। मामु ठाकुर के अनुगामियों में रघुनाथ गोस्वामी, रामचन्द्र, राधावल्लभ, कृष्णजीवन, श्यामसुन्दर, शान्तामणि, हरिनाथ, नवीनचन्द्र, मतिलाल, दयामयी तथा कुंजविहारी मुख्य हैं।

कण्ठाभरण का मूल नाम श्री अनन्त चट्टराज था और वह कृष्णलीला में गोपाली नामक गोपी थे।

ভূগর্ভ গোসাঞি, আর ভাগবত-দাস ।
যেই দুই আসি' কৈল বৃন্দাবনে বাস ॥ ৮২ ॥

**भूगर्भ गोसाञि, आर भागवत-दास ।**
**येइ दुइ आसि' कैल वृन्दावने वास ॥ ८२ ॥**

**भूगर्भ गोसाञि**—भूगर्भ गोसांइ; **आर**—और; **भागवत-दास**—भागवत दास; **येइ दुइ**—वे दोनों; **आसि'**—आकर; **कैल**—किया; **वृन्दावने वास**—वृन्दावन में रहे।

अनुवाद

**गदाधर गोस्वामी की ग्यारहवीं शाखा में भूगर्भ गोसांइ हुए और बारहवीं में भागवतदास। ये दोनों वृन्दावन चले गये और जीवनभर वहीं रहे।**

तात्पर्य

भूगर्भ गोसांइ पहले प्रेममंजरी नाम से जाने जाते थे। वे लोकनाथ गोस्वामी के घनिष्ठ मित्र थे, जिन्होंने वृन्दावन के सात महत्त्वपूर्ण मन्दिरों में से गोकुलानन्द नामक मन्दिर बनवाया। ये सातों मन्दिर हैं—गोविन्द, गोपीनाथ, मदनमोहन, राधारमण, श्यामसुन्दर, राधादामोदर तथा गोकुलानन्द मन्दिर। ये गौड़ीय वैष्णवों के प्रामाणिक संस्थान हैं।

বাণীনাথ ব্রহ্মচারী—বড় মহাশয় ।
বল্লভ-চৈতন্য-দাস—কৃষ্ণ-প্রেমময় ॥ ৮৩ ॥

वाणीनाथ ब्रह्मचारी—बड़ महाशय ।
वल्लभ-चैतन्य-दास—कृष्ण-प्रेममय ॥ ८३ ॥

**वाणीनाथ ब्रह्मचारी**—वाणीनाथ ब्रह्मचारी; **बड़ महाशय**—महान् पुरुष; **वल्लभ-चैतन्य-दास**—वल्लभ चैतन्य दास; **कृष्ण-प्रेम-मय**—कृष्ण-प्रेम से सदा पूर्ण।

अनुवाद

**तेरहवीं शाखा थे वाणीनाथ ब्रह्मचारी और चौदहवीं वल्लभ चैतन्य दास। ये दोनों महापुरुष सदैव कृष्ण-प्रेम से पूरित रहते थे।**

तात्पर्य

आदिलीला (१०.११४) में श्री वाणीनाथ ब्रह्मचारी का वर्णन आया है। वल्लभ चैतन्य के शिष्य नलिनीमोहन गोस्वामी ने नवद्वीप में मदनगोपाल का एक मन्दिर स्थापित किया।

श्रीनाथ चक्रवर्ती, आर उद्धव दास ।
जितामित्र, काष्ठकाटा-जगन्नाथ-दास ॥ ८४॥

**श्रीनाथ चक्रवर्ती, आर उद्धव दास ।**
**जितामित्र, काष्ठकाटा-जगन्नाथ-दास ॥ ८४॥**

**श्रीनाथ चक्रवर्ती**—श्रीनाथ चक्रवर्ती; **आर**—और; **उद्धव दास**—उद्धव दास; **जितामित्र**—जितामित्र; **काष्ठकाटा जगन्नाथ-दास**—काष्ठकाटा जगन्नाथ दास।

अनुवाद

**श्रीनाथ चक्रवर्ती पंद्रहवीं, उद्धव सोलहवीं, जितामित्र सत्रहवीं तथा जगन्नाथ दास अठारहवीं शाखाएँ थे।**

तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर अपने ग्रन्थ *अनुभाष्य* में लिखते हैं, "*शाखानिर्णय* (श्लोक १३) में श्रीनाथ चक्रवर्ती को सर्व सद्गुणों की खान तथा भगवान् कृष्ण की सेवा में पटु बतलाया गया है। इसी प्रकार श्लोक ३५ में उल्लेख है कि उद्धव दास सबको भगवत्प्रेम वितरित करने में अत्यन्त निपुण थे। *गौरगणोद्देश-दीपिका* (२०२) में जितामित्र को श्याममंजरी गोपी कहा गया है। जितामित्र ने *कृष्ण-मायुर्य* नामक एक पुस्तक लिखी। जगन्नाथ दास ढाका के निकट विक्रमपुर के निवासी थे। उनका जन्मस्थान काष्ठकाटा या काठाडिया नामक गाँव था। अब उनके वंशज आड़ियल, कामारपाड़ा तथा

पाइकपाड़ा गाँवों में रहते हैं। उन्होंने यशोमाधव मन्दिर की स्थापना की। इस मन्दिर के पुजारी आड़ियल गाँव के गोस्वामी हैं। चौंसठ सखियों में से वे चित्रादेवी गोपी की सहायिका तिलकिनी थे। उनके वंशजों की सूची इस प्रकार है—रामनृसिंह, रामगोपाल, रामचन्द्र, सनातन, मुक्ताराम, गोपीनाथ, गोलोक, हरिमोहन शिरोमणि, राखालराज, माधव तथा लक्ष्मीकान्त। *शाखानिर्णय* के अनुसार जगन्नाथ दास ने त्रिपुर जिले (अथवा प्रदेश) में हरे कृष्ण आन्दोलन का प्रचार किया।

श्री-हरि आचार्य, सादि-पूरिया गोपाल ।
कृष्णदास ब्रह्मचारी, पुष्प-गोपाल ॥ ८५ ॥

**श्री-हरि आचार्य, सादि-पुरिया गोपाल ।**
**कृष्णदास ब्रह्मचारी, पुष्प-गोपाल ॥ ८५ ॥**

**श्री-हरि आचार्य**—श्री हरि आचार्य; **सादि-पुरिया गोपाल**—सादि पूरिया गोपाल; **कृष्णदास ब्रह्मचारी**—कृष्णदास ब्रह्मचारी; **पुष्प-गोपाल**—पुष्प गोपाल।

### अनुवाद

**श्री हरि आचार्य उन्नीसवीं, सादिपुरिया गोपाल बीसवीं, कृष्णदास ब्रह्मचारी इक्कीसवीं तथा पुष्पगोपाल बाइसवीं शाखाएँ थे।**

### तात्पर्य

*गौरगणोद्देश-दीपिका* के श्लोक १९६ तथा २०७ में उल्लेख हुआ है कि हरि आचार्य पहले कालाक्षी नामक गोपी थे। सादिपुरिया गोपाल पूर्वी बंगाल (सम्प्रति बाँग्लादेश) के विक्रमपुर में हरे कृष्ण आन्दोलन के प्रचारक के रूप में विख्यात हैं। कृष्णदास ब्रह्मचारी पूर्वजन्म में अष्टसखियों में से इन्दुलेखा नाम की सखी थे। वे वृन्दावन में रहते थे। राधा-दामोदर मन्दिर के भीतर एक समाधि है, जो कृष्णदास की समाधि के नाम से विख्यात है। कुछ लोग इसे कृष्णदास ब्रह्मचारी की समाधि बतलाते हैं, तो कुछ लोग कृष्णदास कविराज गोस्वामी की। हम दोनों को ही नमस्कार करते हैं, क्योंकि वे दोनों इस युग के पतितात्माओं को भगवत्प्रेम वितरण करने में दक्ष थे। *शाखा-निर्णय* में उल्लेख है कि पुष्पगोपाल पहले स्वर्णग्रामक नाम से विख्यात थे।

श्रीहर्ष, रघु-मिश्र, पण्डित लक्ष्मीनाथ ।
वङ्गवाटी-चैतन्य-दास, श्री-रघुनाथ ॥ ८६॥
**श्रीहर्ष, रघु-मिश्र, पण्डित लक्ष्मीनाथ ।**
**बङ्गवाटी-चैतन्य-दास, श्री-रघुनाथ ॥ ८६॥**

**श्रीहर्ष**—श्री हर्ष; **रघु-मिश्र**—रघु मिश्र; **पण्डित लक्ष्मीनाथ**—लक्ष्मीनाथ पण्डित; **बङ्गवाटी-चैतन्य-दास**—बंगवाटी चैतन्य दास; **श्री-रघुनाथ**—श्री रघुनाथ।

अनुवाद

**श्रीहर्ष तेईसवीं शाखा थे, रघु मिश्र चौबीसवीं, लक्ष्मीनाथ पण्डित पच्चीसवीं, बंगवाटी चैतन्य दास छब्बीसवीं तथा रघुनाथ सत्ताइसवीं शाखाएँ थे।**

तात्पर्य

*गौरगणोद्देश-दीपिका* (श्लोक १९५ तथा २०१) में रघुमिश्र को कर्पूरमंजरी कहा गया है। इसी प्रकार लक्ष्मीनाथ पण्डित को रसोन्मादा तथा बंगवाटी चैतन्य दास को काली बतलाया गया है। *शाखा-निर्णय* का कथन है कि बंगवाटी चैतन्य दास के नेत्र सदैव अश्रुपूरित रहते थे। उनके वंशजों की भी एक शाखा थी। उनके नाम थे मथुरा प्रसाद, रुक्मिणी कान्त, जीवन कृष्ण, युगल किशोर, रत्नकृष्ण, राधामाधव, उषामणि, वैकुण्ठनाथ तथा लालमोहन या लालमोहन साहा शांखा-निधि। लालमोहन ढाका शहर के एक बड़े व्यापारी थे। *गौरगणोद्देश-दीपिका* (श्लोक १९४ तथा २००) में उल्लेख है कि रघुनाथ पूर्वजन्म में वरांगदा थे।

अमोघ पण्डित, हस्ति-गोपाल, चैतन्य-वल्लभ ।
यदु गाङ्गुलि आर मङ्गल वैष्णव ॥ ८७॥
**अमोघ पण्डित, हस्ति-गोपाल, चैतन्य-वल्लभ ।**
**यदु गाङ्गुलि आर मङ्गल वैष्णव ॥ ८७॥**

**अमोघ पण्डित**—अमोघ पण्डित; **हस्ति-गोपाल**—हस्ति गोपाल; **चैतन्य-वल्लभ**—चैतन्य वल्लभ; **यदु गाङ्गुलि**—यदु गांगुलि; **आर**—और; **मङ्गल वैष्णव**—मंगल वैष्णव।

अनुवाद

**अट्ठाइसवीं शाखा अमोघ पण्डित थे, उन्तीसवीं हस्तिगोपाल, तीसवीं चैतन्य वल्लभ, इकतीसवीं यदु गांगुली तथा मंगल वैष्णव बत्तीसवीं शाखा थे।**

तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर अपने *अनुभाष्य* में लिखते हैं, "श्री मंगल वैष्णव मुर्शिदाबाद जिले के टिटकणा गाँव के निवासी थे। उनके पूर्वज शाक्त थे और वे किरीटेश्वरी देवी की पूजा करते थे। कहा जाता है कि मंगल वैष्णव पहले बाल-ब्रह्मचारी थे, किन्तु घर छोड़ने के बाद उन्होंने अपने शिष्य प्राणनाथ अधिकारी की पुत्री से मयनाडाल ग्राम में विवाह कर लिया। इस परिवार के वंशज कान्दड़ा के ठाकुर कहलाते हैं। कान्दड़ा कटवा के निकट बर्दवान जिले में एक गाँव है। यहाँ पर मंगल वैष्णव के छुटपुट वंशजों के छत्तीस परिवार अभी तक रहते हैं। मंगल ठाकुर के प्रसिद्ध शिष्य हैं प्राणनाथ अधिकारी, कांदड़ा गाँव के पुरुषोत्तम चक्रवर्ती तथा नृसिंह प्रसाद मित्र, जिनके परिवार वाले विख्यात मृदंगवादक हैं। सुधाकृष्ण मित्र तथा निकुंजविहारी मित्र दोनों ही विशेष रूप से विख्यात मृदंगवादक हैं। पुरुषोत्तम चक्रवर्ती के परिवार में कुंजविहारी चक्रवर्ती तथा राधावल्लभ चक्रवर्ती जैसे विख्यात व्यक्ति हुए हैं, जो अभी बीरभूमि जिले में रहते हैं। वे *चैतन्य मंगल* के गीतों को पेशेवार ढंग से गाते हैं। कहा जाता है कि जब मंगल ठाकुर बंगाल से जगन्नाथ पुरी तक सड़क बनवा रहे थे, तो एक झील की खुदाई करते समय राधावल्लभ की मूर्ति मिली। उस समय वे कान्दड़ा नामक स्थान में राणीपुर गाँव में रह रहे थे। मंगल ठाकुर जिस शालिग्राम शिला की स्वयं पूजा करते थे, वह आज भी कांदड़ा गाँव में विद्यमान है। वहाँ पर वृन्दावन चन्द्र की पूजा के लिए एक मन्दिर बनवा दिया गया है। मंगल ठाकुर के तीन पुत्र थे—राधिकाप्रसाद, गोपीरमण तथा श्यामकिशोर। इन तीनों पुत्रों के वंशज अभी भी जीवित हैं।"

चक्रवर्ती शिवानन्द सदा ब्रजवासी ।
महाशाखा-मध्ये तेँहो सुदृढ़ विश्वासी ॥८८॥

**चक्रवर्ती शिवानन्द सदा व्रजवासी ।**
**महाशाखा-मध्ये तेंहो सुदृढ़ विश्वासी ॥ ८८ ॥**

**चक्रवर्ती शिवानन्द**—शिवानन्द चक्रवर्ती; **सदा**—सदा; **व्रज-वासी**—वृन्दावन के निवासी; **महा-शाखा-मध्ये**—महान् शाखाओं के मध्य; **तेंहो**—वे हैं; **सुदृढ़ विश्वासी**—सुदृढ़ विश्वास रखनेवाले।

**अनुवाद**

**शिवानन्द चक्रवर्ती तैंतीसवीं शाखा थे। वे दृढ़ विश्वास के साथ सदा वृन्दावन में रहे और गदाधर पण्डित की एक महत्त्वपूर्ण शाखा माने जाते हैं।**

**तात्पर्य**

*गौरगणोद्देश-दीपिका* (१८३) के अनुसार शिवानन्द चक्रवर्ती पहले लवंग मंजरी थे। यदुनन्दन दास द्वारा लिखित *शाखा-निर्णय* में गदाधर पण्डित की अन्य शाखाओं के भी नाम गिनाये गये हैं, जो इस प्रकार हैं—(१) माधव आचार्य, (२) गोपालदास, (३) हृदयानन्द, (४) वल्लभ भट्ट (वल्लभ सम्प्रदाय या पुष्टिमार्ग सम्प्रदाय अत्यन्त प्रसिद्ध है), (५) मधु पण्डित (ये प्रसिद्ध भक्त खड़दह के निकट साईंबोना गाँव में रहते थे, जो खड़दह स्टेशन से पूर्व दिशा की ओर लगभग दो मील दूर है। इन्होंने वृन्दावन में गोपीनाथजी का मन्दिर बनवाया), (६) अच्युतानन्द, (७) चन्द्रशेखर, (८) वक्रेश्वर पण्डित, (९) दामोदर, (१०) भगवान् आचार्य, (११) अनन्त आचार्यवर्य, (१२) कृष्णदास, (१३) परमानन्द भट्टाचार्य, (१४) भवानन्द गोस्वामी, (१५) चैतन्य दास, (१६) लोकनाथ भट्ट (ये यशोहर या जेस्सोर जिले के तालखड़ि गाँव में रहते थे और इन्होंने राधाविनोद का मन्दिर बनवाया। ये नरोत्तमदास ठाकुर के गुरु तथा भूगर्भ गोस्वामी के पक्के मित्र थे), (१७) गोविन्द आचार्य, (१८) अक्रूर ठाकुर, (१९) संकेत आचार्य, (२०) प्रतापादित्य, (२१) कमलाकान्त आचार्य, (२२) यादव आचार्य, (२३) नारायण पड़िहारी (जगन्नाथ पुरी को निवासी)।

**এই ত' সঙ্ক্ষেপে কহিলাঁ পণ্ডিতের গণ ।**
**ঐছে আর শাখা-উপশাখার গণন ॥ ৮৯ ॥**

**एइ त' सङ्क्षेपे कहिलाँ पण्डितेर गण ।**
**ऐछे आर शाखा-उपशाखार गणन ॥ ८९ ॥**

**एइ त'**—इस प्रकार; **सङ्क्षेपे**—संक्षेप में; **कहिलाँ**—मैंने वर्णन किया है; **पण्डितेर गण**—श्री गदाधर पण्डित की शाखाएँ; **ऐछे**—इसी प्रकार; **आर**—अन्य; **शाखा-उपशाखार गणन**—शाखाओं और उपशाखाओं का वर्णन।

अनुवाद

**इस तरह मैंने गदाधर पण्डित की शाखाओं तथा उपशाखाओं का संक्षेप में वर्णन किया है। तब भी ऐसी अनेक शाखाएँ हैं, जिनका उल्लेख मैंने यहाँ नहीं किया।**

পণ্ডিতের গণ সব,—ভাগবত ধন্য ।
প্রাণ-বল্লভ—সবার শ্রী-কৃষ্ণ-চৈতন্য ॥ ৯০ ॥

**पण्डितेर गण सब,—भागवत धन्य ।**
**प्राण-वल्लभ—सबार श्री-कृष्ण-चैतन्य ॥ ९० ॥**

**पण्डितेर**—गदाधर पण्डित के; **गण**—अनुयायी; **सब**—सभी; **भागवत धन्य**—महान् भक्त; **प्राण-वल्लभ**—हृदय और प्राण, प्राणवल्लभ; **सबार**—उन सबके; **श्री-कृष्ण-चैतन्य**—श्री चैतन्य महाप्रभु।

अनुवाद

**गदाधर पण्डित के सारे अनुयायी महान् भक्त माने जाते हैं, क्योंकि श्री चैतन्य महाप्रभु इन सबके प्राणप्रिय थे।**

এই তিন স্কন্ধের কৈলুঁ শাখার গণন ।
যাঁ-সবা-স্মরণে ভব-বন্ধ-বিমোচন ॥ ৯১ ॥

**एइ तिन स्कन्धेर कैलुँ शाखार गणन ।**
**याँ-सबा-स्मरणे भव-बन्ध-विमोचन ॥ ९१ ॥**

**एइ तिन**—इन तीनों के; **स्कन्धेर**—तने; **कैलुँ**—वर्णन किया; **शाखार गणन**—शाखाओं की गणना; **याँ-सबा**—इन सबका; **स्मरणे**—स्मरण करने से; **भव-बन्ध**—भौतिक संसार के बन्धन से; **विमोचन**—छुटकारा।

अनुवाद

**मैंने जिन तीन तनों ( नित्यानन्द, अद्वैत तथा गदाधर ) की शाखाओं तथा उपशाखाओं का वर्णन किया है, उनके नामों का स्मरण करने मात्र से ही मनुष्य भवबन्धन से छूट जाता है।**

याँ-सबा-स्मरणे पाइ चैतन्य-चरण ।
याँ-सबा-स्मरणे हय वाञ्छित पूरण ॥९२॥

**याँ-सबा-स्मरणे पाइ चैतन्य-चरण ।**
**याँ-सबा-स्मरणे हय वाञ्छित पूरण ॥९२॥**

**याँ-सबा**—इन सबका; **स्मरणे**—स्मरण करने से; **पाइ**—मैं पाता हूँ; **चैतन्य-चरण**—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमल; **याँ-सबा**—इन सबका; **स्मरणे**—स्मरण करने से; **हय**—हो जाता है; **वाञ्छित पूरण**—सभी इच्छाओं की पूर्ति।

अनुवाद

**इन सारे वैष्णवों के नामों का स्मरण करने मात्र से ही मनुष्य श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों तक पहुँच सकता है। निस्सन्देह, उनके पवित्र नामों के स्मरण मात्र से सारी इच्छाएँ पूरी हो जाती हैं।**

अतएव ताँ-सवार वन्दिये चरण ।
चैतन्य-मालीर कहि लीला-अनुक्रम ॥९३॥

**अतएव ताँ-सबार वन्दिये चरण ।**
**चैतन्य-मालीर कहि लीला-अनुक्रम ॥९३॥**

**अतएव**—अतएव; **ताँ-सबार**—उन सबको; **वन्दिये**—मैं नमस्कार करता हूँ; **चरण**—चरणकमलों में; **चैतन्य-मालीर**—चैतन्य महाप्रभु नामक माली की; **कहि**—मैं कहता हूँ; **लीला-अनुक्रम**—क्रमबद्ध लीलाएँ।

अनुवाद

**अतएव उन सबके चरणकमलों को सादर नमस्कार करते हुए अब मैं माली-रूप श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाओं का क्रमवार वर्णन करूँगा।**

গৌর-লীলামৃত-সিন্ধু—অপার অগাধ ।
কে করিতে পারে তাহাঁ অবগাহ-সাধ ॥৯৪॥

**গৌর-লীলামৃত-সিন্ধু—অপার অগাধ ।**
**কে করিতে পারে তাহাঁ অবগাহ-সাধ ॥ ৯৪॥**

**গৌর-লীলামৃত-সিন্ধু**—চৈতন্য महाप्रभु की लीलाओं का सागर; **अपार**—अपार; **अगाध**—अगाध; **के**—कौन; **करिते**—करने में; **पारे**—सक्षम है; **ताहाँ**—उस सागर में; **अवगाह**—गोता लगाना; **साध**—करना।

अनुवाद

**श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाओं का समुद्र अपार तथा अगाध है। भला ऐसे विशाल समुद्र को मापने का साहस कौन कर सकता है?**

তাহার মাধুর্য-গন্ধে লুব্ধ হয় মন ।
অতএব তটে রহি' চাকি এক কণ ॥৯৫॥

**তাহার মাধুর্য-গন্ধে লুব্ধ হয় মন ।**
**অতএব তটে রহি' চাকি এক কণ ॥ ৯৫॥**

**তাহার**—उनके; **মাধুর্য**—माधुर्य रस; **গন্ধে**—सुगन्ध से; **লুব্ধ**—आकर्षित; **হয়**—हो जाता है; **মন**—मन; **অতএব**—अतएव; **তটে**—तट पर; **রহি'**—खड़े होकर; **চাকি**—मैं चखता हूँ; **এক**—एक; **কণ**—कण।

अनुवाद

**उस विशाल समुद्र में डुबकी लगाना सम्भव नहीं है, किन्तु उसकी माधुर्य गन्ध मेरे मन को आकृष्ट करती है। अतएव मैं उस समुद्र के तट पर केवल एक बूँद चखने के लिए खड़ा हूँ।**

শ্রী-রূপ-রঘুনাথ-পদে যার আশ ।
চৈতন্য-চরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥৯৬॥

**শ্রী-রূপ-রঘুনাথ-পদে যার আশ ।**
**চৈতন্য-চরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥ ৯৬॥**

**श्री-रूप**—श्रील रूप गोस्वामी; **रघुनाथ**—श्रील रघुनाथदास गोस्वामी; **पदे**—उनके चरणकमलों पर; **यार**—जिनकी; **आश**—आशा; **चैतन्य-चरितामृत**—चैतन्य चरितामृत नामक पुस्तक; **कहे**—वर्णन करता है; **कृष्ण-दास**—श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी।

### अनुवाद

**श्री रूप तथा श्री रघुनाथ के चरणकमलों की वन्दना करते हुए तथा सदैव उनकी कृपा की आकांक्षा करते हुए मैं कृष्णदास उनके चरणचिह्नों का अनुसरण करते हुए श्रीचैतन्य-चरितामृत का वर्णन कर रहा हूँ।**

*इस प्रकार श्रीचैतन्य-चरितामृत आदिलीला के बारहवें अध्याय का भक्तिवेदान्त-तात्पर्य पूर्ण हुआ, जिसमें अद्वैत आचार्य तथा गदाधर पण्डित के अंशों का वर्णन है ।*